स्त्री जातक विज्ञान

५ श. | ३
६ मं. के. | ४ | चं. २
७ | १
८ | १० शु. | १२ सू. बु. रा.
९ | ११ वृ.

स्त्री-जातक विज्ञान

[स्त्री-जातक सम्बन्धी विभिन्न ग्रहयोगों का
विशद् - विवेचन]

●

लेखक :

ज्योतिर्विद, पं० राजशेखर

रचयिता:-प्रारम्भिक ज्योतिष विज्ञान, द्वादश ग्रह फलादेश
विज्ञान, महादशा विज्ञान, ज्योतिष योग रत्नाकर
मुहूर्त ज्योतिष विज्ञान, ज्योतिष रोग और मृत्यु,
ज्योतिष और ग्रह पीड़ा निवारण आदि
अनेकानेक ज्योतिष ग्रन्थों के
सुप्रसिद्ध प्रणेता

●

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, (वेद नगर)
बरेली—२४३००१ (उ० प्र०)

प्रकाशक :
डॉ० चमनलाल गौतम
संस्कृति संस्थान,
ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)
बरेली २४३००१ (उ. प्र.)

★

लेखक :
पं० राजशेखर

★

★

प्रथम संस्करण
१९७५

★

मुद्रक :
देवदत्त मिश्र
यमुना प्रिन्टिग प्रेस,
आर्य समाज रोड, मथुरा।

★

मूल्य :
एक रुपये पचास पैसे मात्र

विषय-सूची

स्त्री-जातक विज्ञान

विषय प्रवेश

स्त्री-जातक

जन्म-समय के अनुसार जो ग्रह-स्थिति होती है, उसके जो फल पुरुष-जातक के लिए कहे गये हैं, वे ही सब फल स्त्री-जातक पर भी लागू होते हैं; परन्तु जो फल पुरुषों में घटने असम्भव हैं, उन्हें स्त्रियों के लिए तथा जो स्त्रियों में घटने असम्भव हैं, उन्हें पुरुषों के लिए समझना चाहिए। जो फल पुरुषों पर लागू नहीं हो सकते, उनका वर्णन 'स्त्री-जातक' के अन्तर्गत किया गया है।

हमारे देश में स्त्री-जाति पुरुष के अधीन रहती चली आई है। अर्थात् उसकी बाल्यावस्था पिता के आश्रय में, युवावस्था तथा वृद्धावस्था पति के आश्रय में और यदि पति न रहे तो अन्तिमावस्था पुत्र के आश्रय में व्यतीत होती है। अत: पराधीन रहने के कारण वह स्वतन्त्र रूप में अपने ग्रह-फलित का उपभोग नहीं कर पाती। इसी कारण आचार्य वराह मिहिर ने 'वृहज्जातक' में कहा है कि ज्योतिष-ग्रन्थों में जिन राजयोगादि का वर्णन किया गया है उनका फल स्त्रियों के पति को प्राप्त होता है तथा जो नाभस योगादि हैं, उनका फल दोनों को प्राप्त होता है अथवा स्त्री की जन्म कुण्डली के योगों का समस्त फल पुरुष को ही प्राप्त होता है। वह अपने पति अथवा संरक्षक के माध्यम से ही सुख-दु:ख आदि को प्राप्त करती है।

एक मान्यता यह भी है कि विवाह से पूर्व तक स्त्री-जातक का फल स्वतन्त्र होता है अर्थात् वह स्वतन्त्र रूप से उस फल का उपभोग करती है, परन्तु विवाह के बाद उसके पति की कुण्डली का अवलोकन करके ही फलित का निश्चय करना चाहिए अर्थात् पति-पत्नी दोनों की कुण्डली की ग्रह-स्थिति के आधार पर जो निष्कर्ष निकले, उसी को यथार्थ फलादेश समझना चाहिए।

उक्त दोनों ही विचार अपने-अपने स्थान पर ठीक हैं, परन्तु आज का युग बड़ी तेजी से करवट ले रहा है। जब स्त्री पुरुष की दासी अथवा उसकी अधीना उसकी अधीना बनकर ही नहीं रह गई है। नौकरी, व्यवसाय, आजीविकोपार्जन के अन्य उपाय, यहाँ तक कि रहन-सहन, आचार-विचार आदि के क्षेत्र में भी यह पुरुष-वर्ग से स्वतन्त्र होती चली जा रही है। ऐसी स्थिति में, अपनी जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के फल का भी वह स्वतन्त्र रूप से ही उपभोग करेगी, यह मानने में कोई सङ्कोच नहीं होना चाहिए। अस्तु, वर्तमान स्थिति में स्त्री जातक का महत्व तो और अधिक बढ़ा ही है, सामान्य-फलादेश की भी वह स्वतन्त्र उपभोक्ता बन गई है।

द्वादश ग्रहों के फलादेश ग्रह-योग तथा महादशा सम्बन्धी फलादेश का वर्णन हम क्रमशः 'द्वादशग्रह फलादेश विज्ञान, 'महादशा-विज्ञान' तथा 'ज्योतिष योग रत्नाकर' नामक खण्डों में कर आये हैं। अतः स्त्री-पुरुषों के लिए सामान्य-फलादेश की जानकारी के लिए उक्त खण्डों का अध्ययन करना आवश्यक है। जो विषय केवल स्त्रियों से ही सम्बन्ध रखते हैं, उन्हें हम 'स्त्री जातक विज्ञान' खण्ड में प्रस्तुत किया जा रहा है।

फलादेश विचार

'स्त्री-जातक' में जन्मकालिक लग्न और चन्द्रमा इन दोनों के द्वारा स्त्री की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति के सम्बन्ध में विचार

किया जाता है। लग्न तथा चन्द्रमा दोनों से सप्तम भाव के अनुकूल उसके पति (सौभाग्य) का, लग्न तथा चन्द्रमा—दोनों से पञ्चम भाव के द्वारा प्रसव तथा सन्तान का एवं अष्टम भाव द्वारा पति की मृत्यु (वैधव्य) का विचार करना चाहिए। यह स्मरण रखना चाहिए कि स्त्री-जाति के लिए कौमार्यावस्था अर्थात् जन्म से लेकर विवाह से पूर्व तक विवाहित-जीवन काल तथा वैधव्य-काल में अथवा अविवाहित-स्थिति में अनेक प्रकार के फलों का मिलना मुख्यतः लग्न एवं चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर करता है। इसीलिए शास्त्रकारों ने स्त्रीजातक में जन्म-लग्न तथा जन्म-राशि को अधिक महत्व दिया है।

लग्न तथा चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्यग्रहों की स्थिति, दृष्टि तथा युति पर भी फलादेश निर्भर करता है। अतः किसी भी विषय पर विचार करते समय इन सभी बातों पर ध्यान देना आवश्यक है। ग्रन्थ में जो फलादेश लिखे जाते हैं, वे सामान्य - स्थिति के सूचक होते हैं। भाव, राशि तथा ग्रहों की विभिन्न स्थितियों के कारण उनमें बहुत कुछ अन्तर आ जाता है। अतः ज्योतिषी को सब बातों पर विचार करने के उपरान्त ही स्व-विवेक से फल का निश्चय करना चाहिए। ग्रन्थ में लिखित सामान्य स्थिति के फलादेश को ही अन्तिम समझ लेना बुद्धिमानी नहीं होगी। 'द्वादशग्रह फलादेश विज्ञान' खण्ड में इन सभी विषयों पर पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। अतः उसका समुचित अध्ययन करना नितान्त आवश्यक है।

प्रारम्भिक विषय

ज्योतिष तथा फलादेश से सम्बन्धित प्रारम्भिक विषयों का विस्तृत उल्लेख 'सरल भारतीय ज्योतिष विश्वकोश' के प्रथम खण्ड 'प्रारम्भिक-ज्योतिष विज्ञान' में किया जा चुका है। अतः उसका सावधानी पूर्वक अध्ययन करना चाहिये। यहाँ हम कुछ आवश्यक विषयों

का संक्षिप्त उल्लेख पुनः कर रहे हैं, ताकि इस खण्ड के पाठकों को भी उसका लाभ मिल सके। वे निम्नानुसार हैं—

भावों की त्रिकोणादि संज्ञायें

(१) त्रिकोण:— पञ्चम तथा नवम भाव को 'त्रिकोण' कहा जाता है। लघुपाराशरी के मतानुसार लग्न (प्रथम भाव) की गणना भी त्रिकोण में ही की जाती है।

(२) केन्द्र:— लग्न (प्रथम), चतुर्थ, सप्तम तथा दशम इन चारों भावों को केन्द्र कहा जाता है। लघु पाराशरी के मतानुसार लग्न की 'त्रिकोण' संज्ञा है। शेष तीनों भाव—चतुर्थ, सप्तम तथा दशम ही 'केन्द्र' है।

(३) पणफर: द्वितीय, पञ्चम, अष्टम तथा एकादश—इन चारों भावों की 'पणफर' संज्ञा है। मतान्तर से:—(१) द्वितीय एवं दशम तथा (२) षष्ठ एवं 'अष्टम' भाव 'पणफर' संज्ञक होते हैं।

(४) आपोक्लिम:— तृतीय, षष्ठ, नवम तथा दशम—इन चारों भावों की 'आपोक्लिम' संज्ञा है। मतान्तर से—(१) तृतीय एवं एकादश तथा (२) द्वितीय एवं द्वादशभाव 'आपोक्लिम' संज्ञक होते हैं।

(५) मारक:—द्वितीय तथा सप्तम भाव की 'मारक' संज्ञा है।

ग्रहों के बलाबल

(१) सर्वोच्च बली— उच्च राशि का होने पर।
(२) उच्च बली —मूल त्रिकोणस्थ होने पर।
(३) बली —स्वक्षेत्री होने पर।
(४) निर्बल —नीचस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री होने पर।

ग्रहों की पारस्परिक मैत्री

कौन सा ग्रह किस अन्य ग्रह का मित्र, सम अथवा शत्रु है इसे नीचे प्रदर्शित चक्र में देखकर समझ लेना चाहिए —

❀ ग्रह मैत्री चक्र ❀

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चन्द्र मङ्गल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र गुरु	सूर्य शुक्र राहु	सूर्य चन्द्र मङ्गल	बुध शनि राहु केतु	बुध शुक्र राहु केतु	बुध शुक्र शनि	बुध शुक्र शनि
सम	बुध	मङ्गल शुक्र शनि गुरु	शुक्र शनि	मङ्गल शुक्र शनि केतु	शनि राहु केतु	मङ्गल गुरु	गुरु	गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि राहु केतु	राहु केतु	बुध राहु केतु	चन्द्र	शुक्र बुध	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मङ्गल	सूर्य चन्द्र मङ्गल	सूर्य चन्द्र मङ्गल

ग्रहों का राशि स्वामित्व आदि

कौन सा ग्रह किस राशि का स्वामी होता है तथा किस राशि में उच्चस्थ, मूल त्रिकोणगत एवं स्वक्षेत्री होता है, इसे नीचे प्रदर्शित चक्र में देखकर समझ लेना चाहिए ।

॥ ग्रहों के राशि स्वामित्व आदि का चक्र ॥

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
कौन सा ग्रह किस राशि का स्वामी है	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मिथुन कन्या	धनु मीन	वृष तुला	मकर कुंभ	कन्या	मिथुन
कौन सा ग्रह किस राशि के कितने अंश तक उच्चस्थ होता है	मेष १० अंश तक	वृष ३ अंश तक	मकर २८ अंश तक	कन्या १५ अंश तक	कर्क ५ अंश तक	मीन २७ अंश तक	तुला २० अंश तक	मिथुन	धनु
कौन सा ग्रह किस राशि के कितने अंश तक नीचस्थ होता है	तुला १० अंश तक	वृश्चिक ३ अंश तक	कर्क २८ अंश तक	मीन १५ अंश तक	मकर ५ अंश तक	कन्या २७ अंश तक	मेष २० अंश तक	धनु	मिथुन

कौन सा ग्रह किस राशि के किन अंशों में मूल त्रिकोणगत होता है	सिंह १ से २० अंश तक	वृष ४ से ३० अंश तक	मेष १ से १८ अंश तक	कन्या १६ से २० अंश तक	धनु १ से १३ अंश तक	तुला १ से १० अंश तक	कुंभ १ से २० अंश तक	कर्क	सिंह
कौन सा ग्रह किस राशि के किन अंशों में स्वक्षेत्री होता है।	सिंह २१ से ३० अंश तक अंश तक	कर्क १ से ३० अंश तक १ अंश तक	मेष १९ से ३० अंश तक तथा वृश्चिक १ से ३० अंश तक	कन्या २१ से ३० अंश तक तथा मिथुन १ से ३० अंश तक	धनु १४ से ३० अंश तक तथा मीन १ से ३० अंश तक	तुला ११ से ३० अंश तक तथा वृष १ से ३० अंश तक	कुंभ २१ से ३० अंश तक तथा मकर १ से ३० अंश तक	कन्या १ से ३० अंश तक	मीन १ से ३० अंश तक

ग्रहों की दृष्टि

कौन-सा ग्रह किन-किन भावों पर एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद अथवा पूर्ण दृष्टि डालता है, इसे नीचे प्रदर्शित चक्रानुसार समझ लेना चाहिए।

❀ ग्रह दृष्टि चक्र ❀

ग्रहों के नाम	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
किन भावों पर पूर्ण दृष्टि पड़ती है	७	७	४ ७ ८	७	५ ७ ९	७	३ ७ १०	५ ७ ९ १२	५ ७ ९ १२
किन भावों पर त्रिपाद दृष्टि पड़ती है।	४ ८	४ ८	×	४ ८	४ ८	४ ८	४ ८	अन्ध	अन्ध
किन भावों पर द्वितीय दृष्टि पड़ती है	५ ९	५ ९	५ ९	५ ९	×	५ ९	५ ९	२ १०	२ १०
किन भावों पर एकपाद दृष्टि पड़ती है	३ १०	३ १०	३ १०	[illegible] १०	२ १०	२ १०	×	३ ६	२ ६

नवमांश

एक राशि के नौवें भाग को 'नवमांश' या 'नवांश' कहा जाता एक नवांश' कहा जाता है। एक नवमांश ३ अश २० कला का होता है। इस प्रकार एक राशि में नौ राशियों के नवमांश होते हैं। ये नौ नवमांश प्रति राशि में किन-किन राशियों के होते हैं—इसे जानने का नियम यह है कि मेष राशि में पहला नवमांश मेष का, दूसरा वृष का,

तीसरा मिथुन का, चौथा कर्क का, पाँचवाँ सिंह का, छठा कन्या का, सातवां तुला का आठवाँ वृश्चिक का तथा नवां धनु का होता है। फिर वृष राशि में पहला मकर का दूसरा कुम्भ का, तीसरा मीन का, चौथा मेष का पाँचवाँ वृष का होगा। इसी प्रकार यह क्रम अन्य राशियों में आगे चलता चला जायेगा इस क्रम को आगे किये गये 'नवमांश चक्र' में स्पष्ट किया गया है।

विशेष—चर-राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) का पहला नवांश, स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) का पाँचवाँ नवांश तथा द्वि-स्वभाव राशि (मिथुन, कन्या, धनु तथा मीन) का अन्तिम नवांश 'वर्गोत्तम नवांश' कहे जाते हैं।

विषम राशियों—मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ में पहला ५ अंश मंगल का, दूसरा ५ अंश शनि का, तीसरा ८ अंश गुरु का, चौथा ७ अंश बुध का तथा पांचवां ५ अंश शुक्र का त्रिशांश होता है। अर्थात् इन विषम राशियों में यदि कोई ग्रह १ से ५ अंश तक रहे तो उसे मङ्गल के त्रिशांश में कहा जायेगा। ६ से १२ वें अंश तक शनि के, ११ से १८ वें अंश तक गुरु के, १९ से २५ वें अंश तक बुध के तथा २६ से ३० वें अंश तक रहे तो वह शुक्र के त्रिशांश में कहा जायेगा।

सम राशियों:—वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन में पहला अंश शुक्र का, दूसरा ७ अंश बुध का, तीसरा ८ अंश गुरु का, चौथा ५ अंश शनि का तथा पाँचवां ५ अंश मङ्गल का त्रिशांश होता है।

राशि पद्धति के अनुसार विषम राशियों मे ५ अंश तक मेष का १० अंश तक कुम्भ का, १८ अंश तक धनु का, २५ अंश तक मिथुन का तथा ३० अंश तक तुला का त्रिशांश होता है।

इस क्रम को आगे दिये गये 'त्रिशांश चक्र' में स्पष्ट किया गया है।

❀ नवमांश चक्र ❀

स्वामी	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
३।२०	१ मं.	१० श	७ शु.	४ चं	१ मं.	१० श.	७ शु	४ चं.	१ मं	१० श	७ शु.	४ चं.
६।४०	२ शु.	११ श	८ मं.	५ र.	२ शु.	११ श.	८ मं.	५ र.	२ शु	११ श.	८ मं.	५ र.
१०।०	३ बु	१२ गु	९ गु.	६ बु.	३ बु	१२ गु	९ गु.	६ बु	३ बु.	१२ गु.	९ गु.	६ बु.
१३।२०	४ चं.	१ मं.	१० श	७ शु	४ चं.	१ मं.	१० श	७ शु.	४ चं	१ मं.	१० श	७ शु.
१६।४०	५ र.	२ शु	११ श	८ मं	५ र	२ शु.	११ श.	८ मं	५ र.	२ शु.	११ श	८ मं.
२०।०	६ बु.	३ बु	१२ गु	९ गु	६ बु	३ बु	१२ गु.	९ गु.	६ बु.	३ बु	१२ गु	९ गु.
२३।२०	७ शु	४ चं.	१ मं.	१० श	७ शु	४ चं.	१ मं.	१० श.	७ शु	४ चं	१ मं.	१० श
२६।४०	८ म	५ र.	२ शु	११ श	८ मं.	५ र.	२ शु.	११ श	८ मं	५ र.	२ शु.	११ श
३०।०	९ गु.	६ बु.	३ शु.	१२ गु	९ गु	६ बु.	३ बु	१२ गु	९ गु.	६ बु.	३ बु.	१२ गु

❀ त्रिशांश चक्र ❀

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
५ मं.	५ शु.	५ मं	५ शु	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.	५ मं.	५ शु.
१० श.	१२ बु.	१० श.	१२ बु.	१० श.	१२ बु.	१० श.	१२ बु.	१०श.	१२ बु.	१० श.	१२ बु.
१८ गु.	२० गु.	१८ गु.	२० गु.	१८ गु.	२० गु.	१८ गु.	२०गु.	१८ गु.	·० गु.	१८ गु.	२० गु.
२५ बु.	२५ श.	२५ बु.	२५ श.	२५ बु.	२५ श.	२५ बु.	२५ श.	२५ बु.	२५ श.	२५ बु.	२५ श
३० शु.	३० मं.	३० शु.	३० मं.	३०शु.	३० मं.	३० शु.	३० मं.	३० शु.	३० मं.	३० शु.	३० मं.

स्त्री जातक में चूंकि नवांश एवं त्रिशांश के आधार पर भी फल का विचार किया जाता है। अतः हमने यहाँ इन दोनों का संक्षिप्त उल्लेख कर दिया है।

ग्रहों की अवस्थाऐं

ग्रहों की चार अवस्थाऐं होती हैं—

(१) **किशोरावस्था**—३ से ९ अंश तक

(२) **युवावस्था**– १० से २२ अंश तक।

(३) **वृद्धावस्था**—२३ से अंश २८ तक।

(४) **मृत-अवस्था**– २९ से २ अंश (२९, ३०, १ और २) तक।

ग्रहों का शुभाशुभत्व

ग्रहों की शुभाशुभादि ४ संज्ञाऐं हैं:—

(१) **शुभ ग्रह**:—पूर्णचन्द्र, शुभग्रह युक्त बुध, गुरु तथा शुक्र।

(२) **अशुभ ग्रह**:–क्षीणचन्द्र, पापग्रह युक्त बुध, सूर्य, शनि, राहु और केतु।

(३) **क्रूर ग्रह**:– सूर्य और राहु।

(४) **पाप ग्रह**:—मङ्गल, शनि और केतु।

टिप्पणी:—पूर्ण चन्द्र को शुभ तथा क्षीण चन्द्र को 'अशुभ' माना जाता है। बुध जब किसी शुभग्रह के साथ बैठा होता है, तब शुभ होता है और जब पापग्रह के साथ होता है, तब अशुभ माना जाता है। बुध यदि किसी ग्रह के साथ न हो और भी न हो तो शुभ होता है।

चन्द्रमा का शुभाशुभत्व

चन्द्रमा के शुभाशुभत्व के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए—

(१) **पूर्णचन्द्र**:—शुक्ल पक्ष की एकादशी से कृष्णपक्ष की पंचमी तक चन्द्रमा पूर्ण होता है, अतः 'शुभ' माना जाता है।

(२) **क्षीण चन्द्र**:—कृष्णपक्ष की एकादशी से शुक्ल पक्ष की पचमी तक चन्द्रमा क्षीण होता है, अतः अशुभ' माना जाता है।

(३) **मध्यम चन्द्र**:—कृष्णपक्ष की षष्ठी से कृष्ण पक्ष की दशमी तक तथा शुक्लपक्ष की षष्ठी से शुक्लपक्ष की दशमी तक चन्द्रमा 'मध्यम' माना जाता है, अतः अपना मध्यम प्रभाव ही प्रदर्शित करता है।

(४) **शुभचन्द्र**—शुभ ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा शुभ माना जाता है।

(५) **अशुभ चन्द्र**:—अशुभ ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा अशुभ माना जाता है।

विशेष टिप्पणी—(१) स्त्री जातक के फलादेश के लिए आवश्यक ज्ञातक विषयों का यहाँ संक्षिप्त उल्लेख किया गया है। विशेष जानकारी के लिए 'प्रारंभिक ज्योतिष विज्ञान' खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

(२ अगले प्रकरणों में स्त्री-जातक सम्बन्धी विभिन्न योगों आदि के फलादेश को प्रस्तुत किया जायेगा। उन पर निर्णय लेते समय ग्रह, राशि तथा भाव की स्थिति, दृष्टि, युति, बलाबल आदि सभी बातों पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर लेना चाहिए। उल्लिखित फलादेश में जहाँ परस्पर-विरोधी मतान्तर हों, वहाँ मध्यम-मार्ग अपनाना उचित रहेगा। इसी प्रकार ग्रहों की उच्च तथा नीच स्थिति, बलाबल एवं शुभ-अशुभ दृष्टि से भी फलादेश में अन्तर आ सकता है। अतः फलादेश का निश्चय करने से पूर्व स्व-विवेक तथा ज्योतिषीय-सिद्धान्तों का प्रयोग करना भी आवश्यक है।



लग्न एवं राशिफल

लग्न फल

स्त्री की जन्म लग्न का फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के प्रथम भाव में —

'मेष'—लग्न हो तो ऐसी निष्ठुर स्वभाव की, झूँठ बोलने वाली, क्रोधी, बन्धु-वर्ग से विरक्त, घातक तथा कफ युक्त होती है।

वृष—लग्न हो तो ऐसी स्त्री विनय शीला, सुन्दर, सत्य बोलने वाली, आज्ञाकारिणी, सब कलाओं में कुशल तथा पति को प्रिय होती है।

मिथुन—लग्न हो तो ऐसी स्त्री कामासक्त. गुणहीन, कठोर वचन बोलने वाली, क्रूरकर्म करने वाली, कफ-वात युक्त तथा बहुत खर्च करने वाली होती है।

कर्क—लग्न हो तो ऐसी स्त्री स्वरूपवान्, कान्ति युक्त, साधु वृत्ति, नीति प्रिय, भाइयों को प्रिय तथा समस्त सुखों से युक्त होती है।

सिंह—लग्न हो तो ऐसी स्त्री दूषित शरीर वाली, कफ युक्त-कलह, प्रिय, कठोर स्वभाव वाली, परन्तु परोपकारिणी होती है।

कन्या—लग्न हो तो ऐसी स्त्री जितेन्द्रिय, सौभाग्यवती, धर्माचरण करने वाली, समस्त कलाओं में निपुण, सुखी तथा स्वर्ण—धन युक्त होती है।

तुला—लग्न हो तो ऐसी स्त्री मतिमन्द,गर्विष्ट क्षमा रहित, प्रीतिहीन तथा पर, नीति युक्त होती है।

वृश्चिक—लग्न हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर, रूपवान्, गुणवान्, पुण्यशीला, पतिव्रता तथा सत्यवादिनी होती है।

धनु—लग्न हो तो ऐसी स्त्री उत्तम बुद्धि वाली, कठोर कर्म करने वाली, स्नेह तथा प्रीति हीन एवं प्रेम से वश में होने वाली होती है।

मकर—लग्न हो तो ऐसी स्त्री गुणवती, सत्यवादिनी, सुन्दर, रूपवती, अच्छे कर्म करने वाली, समाज में प्रतिष्ठित, तथा शत्रु को परास्त करने वाली होती है।

कुम्भ—लग्न हो तो ऐसी स्त्री कृतज्ञता रहित, रक्तदोष एवं मद (घमण्ड) से युक्त, अधिक खर्चीली तथा पर-पुरुष में आसक्ति रखने वाली होती है।

मीन—लग्न हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता, नयशील, विनम्र, गुरु की आज्ञाकारिणी, बन्धु-प्रिय, देवता तथा ब्राह्मणों की भक्त एवं पुत्रवती होती है।

राशिफल

स्त्री की जन्म—राशि का फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यदि स्त्री का जन्म—

मेष—राशि में हो तो वह सुन्दर शरीर वाली, पति को प्रिय तथा गुरुजनों की सेवा करने वाली होती है।

वृष—राशि में हो तो यह सुशीला, पुत्र-पौत्रवती, विचार-शील, विद्या-सम्पन्न, पति-प्रिया, धनवती एवं तन्त्रशास्त्र में विश्वास रखने वाली होती है।

मिथुन—राशि में हो तो वह गुणवती, रूपवती, सुन्दर शरीर एवं सुन्दर नेत्रों वाली, सुशील स्वभाव की परोपकारिणी तथा धन-धान्य-सम्पन्न होती है।

कर्क—राशि में हो तो वह शत्रु-रहिता, मानवती, आप्तजनों में पूज्य तथा ब्राह्मण एव देवताओं की भक्ति करने वाली होती है।

सिंह—राशि में हो तो वह रूपवती स्त्रियों की नेत्री अर्थात् परम सुन्दरी, वस्त्रा भूषण युक्त, क्रूर कर्म करने वाली तथा मांसाहारिणी होती है।

कन्या—राशि में हो तो वह शुद्ध आचरण वली, शत्रु पर विजय पाने वाली, क्षमाशील, धन एवं पशुयुक्त तथा अपने पति को प्रिय होती है।

तुला—राशि में हो तो वह व्रत सम्पन्न, सुन्दर रूप वाली, पुत्रवती, बन्धु-वर्ग पर प्रेम करने वाली तथा पतिव्रता होती है।

वृश्चिक—राशि में हो तो यह निरभिमान, धनवती, कार्यकुशल तथा ज्येष्ठ सदस्यों की प्रिय होती है।

धनु—राशि में हो तो वह दानी, विनयशील, प्रेम करने वाली, व्रत सम्पन्न, गीति-प्रिय तथा कन्या-सन्तति वाली होती है।

मकर—राशि में हो तो वह सुन्दर, सत्य प्रिया, गम्भीर, विद्यावती, नीतियुक्ता, नियमित स्वभाव वाली तथा शत्रु पर विजय पाने वाली होती है।

कुम्भ-राशि में हो तो यह चन्द्रमा के समान रूपवती, सुन्दर शरीर वाली, दानशीला सत्कर्म करने वाली, संपत्तिशालिनी, संतानवती तथा अभिमानिनी होती है।

मीन—राशि में हो तो वह सुन्दर स्वरूप वाली, सुशील स्वभाव की धर्म पर श्रद्धा रखने वाली, लज्जायुक्त, मानिनी, पुत्रवती तथा समस्त कलाओं में निपुण होती है।

टिप्पणी—(१) लग्न तथा चन्द्रमा से शरीर के रूप-रंग आदि का, पंचम भाव से सन्तान आदि का, लग्न तथा चन्द्रमा दोनों के सप्तम स्थान से सौभाग्य आदि का तथा अष्टम भाव से वैधव्य आदि का विचार करना चाहिए।

(२) स्त्री-जाति के अनेक फल विवाह से पूर्व, विवाह के पश्चात् अथवा वैधव्य काल में मिलते हैं। वे सब लग्न तथा चन्द्रमा की स्थिति, गति, शुभाशुभग्रहों की स्थिति, दृष्टि एव योगादि पर निर्भर करते हैं।

(३) जो स्त्रियाँ विद्या में प्रवीण, स्वतन्त्र तथा नौकरी एवं व्यवसाय आदि का संचालन स्वयं करती हैं, उन्हें 'स्त्री-जातक' के आधार पर फलित का लाभ होना अधिक सम्भव होता है।



भावानुसार ग्रहफल

स्त्री की जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का फल निम्नानुसार समझना चाहिए।

सूर्य का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में सूर्य हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव वाली, दुष्टवृत्त, कृतघ्न, परान्नप्रिय, कृश-शरीर, कांति हीन रोगयुक्ता, बाल्यावस्था में रोगिणी, आँख में कष्ट पाने वाली, नीच जनों की सेविका एवं धन तथा पुत्र के सुख से वंचित रहती है। यदि सूर्य उच्चस्थ हो तो सुखी होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री कलह-प्रिया, धन धान्य-विहीना, पराक्रम हीना, द्वेषी, स्नेहहीना, कठोर भाषिणी पारिवारिक सुख से रहित, नेत्र-रोगवाली तथा मध्मय धन वाली होती है। यदि सूर्य उच्च राशिस्थ हो तो सुख प्राप्त करती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री सुन्दर शरीर एवं मुख वाली, विशाल स्तनों वाली, नम्र स्वभाव वाली, रोग पीड़िता, परन्तु सदैव आनन्दित दिखाई देने वाली, बन्धु-सुख से रहित, धन सम्पन्न, धैर्य सम्पन्न, शक्ति सम्पन्न, पति-पुत्रादि के सुख से नियुक्त तथा दूसरों की रक्षा करने वाली होती है।

चतुर्थ भाव - यदि चौथे भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री बड़े दाँतों वाली, रोग युक्ता, प्रभाव हीना लोगों से तिरस्कृत, सुख-रहिता होती है। मतान्तर से–पति-पुत्रादि के सुख से युक्त, धन, धैर्य तथा शक्ति से सम्पन्न, कोमल हृदय वाली, सुन्दर पति वाली, सङ्गीत शिल्पकलाओं की जानकार तथा सदैव सुखी रहती है।

पंचम भाव—यदि पाँचवें भाव में 'सूर्य' हो तो अल्प-पुत्रवती व्रताचरणी, माता-पिता की भक्त प्रिय भाषिणी, देव ब्राह्मणों की पूजक, व्रताचरिणी, स्त्रियों में श्रेष्ठ होती है। मतान्तर से—एक सन्तान वाली, बाल्यावस्था में रोगिणी तथा धन की हीना होती है। यदि सूर्य मेष अथवा सिंह राशि का हो तो धन पुत्रादि के सुख से युक्त होती है।

षष्ठ भाव - यदि छठे भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री दक्ष, प्रौढ़, धर्म-कर्म प्रिय, शान्त स्वभाव वाली, शत्रु जयी, सौभाग्यशीला, सुन्दर शरीर वाली, अपने कुटुम्ब की रक्षा करने वाली, धन पुत्रादि के सुख से युक्त, उत्तम स्वभाव वाली तथा लोक में मान्य होती है।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री कुरूपा, पापिनी लज्जाहीना, कफयुक्ता, पति द्वारा परित्यक्त, पति-सुख से रहित, चंचला तथा कपिल वर्ण के नेत्रों वाली होती है।

अष्टम भाव - यदि आठवें भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री रक्तदोष से पीड़ित, उत्साह हीना, कुधर्माचरणी, दारिद्रय दुःख से युक्त चंचल स्वभाव वाली, मलिन चित्तवाली, रोगिणी, दुःशीला त्याग करने वाली तथा पति के सुख से रहित होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री क्रोधिनी, साहस कर्म-प्रिय, बहुत शत्रुओं वाली, भाग्यहीना तथा ऐश्वर्य हीना होती है। मतान्तर से—ऐसी स्त्री सुन्दर केश वाली, सत्य बोलने वाली, धन-धान्य से युक्त, बाल्यावस्था में दुःखी, मध्यावस्था में सुखी तथा वृद्धावस्था में रोग से कष्ट पाने वाली होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री कुकर्मी, निस्तेज, पीड़िता तथा स्वकृत्यों के प्रति दुर्लक्ष करने वाली, होती है। मतान्तर से—समस्त गुणों से युक्त, अभिमानिनी, दानी, धन पुत्र तथा सुख से सम्पन्न एवं नृत्य-गायन में रुचि रखने वाली होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री समस्त कलाओं में निपुण, पुत्र-पौत्र युक्त, बन्धु वर्ग को मान्य, लाभयुक्त, जितेन्द्रिया, सुखी, धनी, सुन्दरी, सुशीला एवं दूसरों के गुणों का अनुकरण करने वाली होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'सूर्य' हो तो स्त्री क्रूर कर्म करने वाली, पापिन, शुचिता रहित, उद्धत स्वभाव वाली; दुष्ट वृत्ति वाली, बहुत खर्च करने वाली, सब जगह जाने वाली, आँख में रोग वाली, दुर्बल, कामातुरा, मलिन बुद्धि वाली, पर-पुरुष में आसक्त तथा पर-धन प्राप्त करने वाली होती है।

'चन्द्रमा' का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'चन्द्रमा' का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में 'चन्द्रमा' शुक्लपक्ष का हो तो ऐसी स्त्री गौरवर्ण, सुन्दर स्वरूप वाली तथा धन-धान्य से युक्त, होती है।

यदि कृष्ण पक्ष का चन्द्र हो तो कृशांगी, कुवस्त्र धारिणी विवाद प्रिय, रुग्णा तथा अल्प सुखवाली होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री नम्र स्वभाव वाली, धर्मशीला, नीतियुक्ता, धनवती, पति का कार्य करने में दक्ष, ब्राह्मणों का आदर करने वाली, सुन्दर, कीर्तिमती, सुखी, सुशील तथा दान-व्रत आदि करने वाली होती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'चन्द्रमा' हो तो

स्त्री कफ वात पित्त से युक्त, दुष्ट स्वभाव वाली, कुसंगति- प्रिया, कठोर भाषिणी, नीति-रहिता, कृपण, कृतघ्न, धन पुत्रादि से युक्त तथा थोड़े भाइयों वाली होती है। यदि बली चन्द्रमा हो तो बन्धु-सुख से सम्पन्न होती है।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री स्थिर स्वभाव वाली, सुख से युक्त, गृह की भक्ति करने वाली, धर्माचरण रता, आभूषणों से अलंकृत, सुखी मधुर भाषिणी तथा मत्स्य-मांस में में रुचि रखने वाली होती है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो रोगिणी, दुर्बल तथा दुःखी होती है।

पंचम भाव- यदि पाँचवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री रूपवती गुणवती, सुपुत्रवती, सेवक-सुख-सम्पन्ना, गौरवमयी, पति की आज्ञा का पालन करने वाली, पति की प्रिय तथा सुशीला होती है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो फल विपरीत होता है।

षष्ठभाव—यदि छठे भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री चंचल स्वभाव की, विनयहीन, कृशशरीर वाली, रोगग्रस्त, दीर्घद्वेषी, अल्प-धनवती, बाल्यावस्था में रोगिणी तथा अपने शत्रुओं को जीतने वाली होती है। यदि चन्द्रमा पूर्ण बली होकर कर्क अथवा वृष राशि में हो तो अत्यन्त सुख प्राप्त करती है।

सप्तम भाव - यदि सातवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री चतुर, पतिप्रिया, तेजस्विनी, ऐश्वर्य सम्पन्ना, मधुर भाषिणी, पति प्रिया, धर्म तथा विवेक से युक्त, सब सुखों से युक्त तथा सुन्दर एवं गुणवान् पति वाली होती है। यदि क्षीण चन्द्रमा हो तो पति-सुख से रहित होती है।

अष्टम भाव - यदि आठवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री कुरूपा, विद्रूप अवयवों वाली, क्रोधिनी, घातकी तथा निन्दित होती है। चन्द्रमा पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बाल्यावस्था में ही मृत्यु

को प्राप्त हो जाती है। यदि गुरु केन्द्रस्थ अथवा शुभ ग्रह दृष्ट हो तो दीर्घायु होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री सुन्दर, पतली कमर वाली, सुन्दर पुत्र तथा सेवकों से युक्त, समर्थ समस्त सुख प्राप्त करने वाली, धर्मात्मा तथा सौभाग्यवती होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण, शत्रु गृही अथवा नीचस्थ हो तो धर्म एवं सुख से रहित होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो, स्त्री पुण्यशीला, सत्यवादिनी, सन्तुष्ट, दोनों कुलों में श्रेष्ठ, स्वर्णयुक्त, दानी एवं पति-पुत्र तथा धन से युक्त होती है। यदि चन्द्रमा क्षीण, नीचस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री हो तो दुबली पतली एवं कास-रोग वाली होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री स्वस्थ, विनम्र, दानी, सन्तुष्ट चित्त, इन्द्रिय-निग्रही, सुन्दरी, सौभाग्यवती, सब कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली तथा धन-पुत्र आदि सब प्रकार के सुखों से सम्पन्न होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'चन्द्रमा' हो तो स्त्री दीन, अन्यायी, दरिद्री, क्षमाहीन, पाप-प्रकृति वाली, बहुत खर्च करने वाली, क्षीण नेत्रों वाली, दुश्चरित्रा, विकट रूप वाली तथा बाल्यावस्था में रोगिनी होती है।

'मंगल' का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'मङ्गल' का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में 'मङ्गल' हो तो स्त्री रक्त दोष से पीड़ित, भाग्यहीन, पराक्रमहीन, गर्वयुक्ता, पति द्वारा तिरस्कृत, दुर्बल शरीर वाली, बाल्यावस्था में रोगिणी, सब प्रकार के सुखों से रहित, कृष्णवर्ण, पाप कर्म में रत तथा दाँतों में रोग वाली होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'मङ्गल' हो तो स्त्री दरिद्र,

कुत्सित बुद्धिवाली, रोगिणी, कामातुरा, अनेक पुरुषों की आश्रित, दुर्बल, तथा गृह कार्य में कुशल होती है। मतान्तर-से सुख भागिनी, क्षमाशीला तथा जुआरी पुरुष की पत्नी होती है।

तृतीय भाव– यदि तीसरे भाव में स्वक्षेत्री या उच्चस्थ 'मङ्गल' हो तो स्त्री सौभाग्यवती, साधु सन्त तथा अन्य सभी लोगों को प्रिय होती है। मङ्गलमित्र क्षेत्री अथवा शत्रु क्षेत्री हो तो धनहीना होती है। सामान्यत: भाइयों के सुख से हीन होती है।

चतुर्थ भाव – यदि चौथे भाव में मङ्गल हो तो स्त्री सुखहीन, धनहीन, तिरस्कृत, सदैव क्रुद्ध रहने वाली, रोगिणी, कुबुद्धि, परपुरुष में आसक्त, लोभित, भ्रातृ-सुख से रहित तथा गृह-सुख से रहित होती है।

पंचम भाव – यदि पाँचवें भाव में मङ्गल हो तो स्त्री लज्जा-हीन, सन्तानहीना अथवा कुपुत्रवती, बन्धु सुख विहीन, पाप कर्म में दक्ष, तथा दु:ख भोगने वाली होती है। यदि मङ्गल स्वक्षेत्री अथवा उच्चस्थ हो तो एक पुत्र होता है।

षष्ठ भाव – यदि छठे भाव में मङ्गल हो तो स्त्री शत्रु रहित, स्वस्थ, रोग-रहित, धनवती, पति युक्त तथा पुत्र सुख युक्ता होती है। यदि मङ्गल निर्बल हो तो अल्प रोग भय होता है।

सप्तम भाव – यदि सातवें भाव में 'मङ्गल' शुभ दृष्ट न हो तो स्त्री कुरूप, दुष्ट स्वभाव वाली, ऐश्वर्यहीन, गुणहीन तथा बाल-विधवा होती है। मङ्गल शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो दुष्ट स्वभाव वाली, परपुरुषों में आसक्त, चंचला एवं दु:ख भागिनी होती है।

अष्टम भाव—यदि आठवें भाव में 'मङ्गल' हो तो स्त्री कृश शरीर वाली कृष्णवर्ण, दरिद्र, दु:खी रुग्णा, कान्तिहीन, हिंसाप्रिय, तथा धन-धान्यादि के सुख से रहित होती है। इस योग वाली स्त्री की मृत्यु पानी में डूबकर होती है अथवा उसके पति की मृत्यु होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'मङ्गल' हो तो स्त्री सुन्दर, रोगी, तामसी-आहार करने वाली, धर्महीन, भाग्यहीन, सज्जन द्वारा परित्यक्त, जन-हीन, बड़े परिवार वाली, सङ्गीत एवं शिल्प-कलाओं का जानकार तथा लोक-विख्यात होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'मङ्गल' हो तो स्त्री अधर्मा शीलहीन, लज्जाहीन तथा रति-प्रिया होती है। मतान्तर से—स्व-कुल में श्रेष्ठ परोपकारिणी, सन्तुष्ट, कार्य कुशल, वस्त्राभूषण सम्पन्न तथा राजा की पत्नी है। स्वक्षेत्री तथा उच्चस्थ मङ्गल में ऐसा होता है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'मङ्गल' हो तो स्त्री धर्मासक्त, पति से प्रेम करने वाली, श्रेष्ठ स्वभाव वाली, बहुत धन वाली, पति-पुत्रादि के सुख से युक्त, सब कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली तथा सब कार्यों में कुशल होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'मङ्गल' हो तो स्त्री दुर्बल मद्यपान प्रिय, आतुर, गुणहीन, घातकी, अधिक खर्च करने वाली, धनहीन, क्रोधिनी, पति-सुख से हीन तथा बन्धुओं से विरोध करने वाली होती है।

'बुध' का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में बुध हो तो स्त्री रूपवती, धर्मात्मा, नीति युक्त, सत्यवादिनी, सर्वप्रिय, धन-धान्य-सम्पन्न, पति द्वारा मान्य, पण्डिता, धैर्यवान्, सुशीला, अधिक सन्तान वाली, गृह-कार्य में कुशल प्रियवादिनी, शिल्पपक्ष तथा दानादि सत्कर्म करने वाली होती है।

द्वितीय भाग—यदि दूसरे भाव में 'बुध' हो तो स्त्रा सुन्दरी, गुणवती, धनवती, रूपवती, शुद्ध आचरण वाली, ब्राह्मणों की सेवा में

तत्पर, यज्ञादि पर प्रीति रखने वाली, कोमल हृदय वाली, कार्य-कुशल एवं सन्तान-सुख से युक्त होती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'बुध' हो तो स्त्री देवता तथा ब्राह्मणों की भक्त, पुत्रवती, मानवती, समर्थ जनों को अनुकुल, धनवती, परिजनों से युक्त, थोड़े सहोदर, वाली तथा अपने कर्म को करने वाली होती है। मतान्तर से दुःख भोगने वाली तथा कुटिल-हृदय वाली भी होती है।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में बुध हो तो स्त्री धर्मरता, प्रख्यात कुल में उत्पन्न, श्रेष्ठ सेवकों से युक्त तथा सज्जनों से युक्त होती है। मतान्तर से अधिक कार्यवाली, रोगिणी, दुर्बल, चंचला, हास्य-प्रिया तथा सहोदर, सुख से रहित होती है।

पंचम भाव—यदि पाँचवें भाव में 'बुध' हो तो स्त्री दरिद्री, साधु-सन्तों का परित्याग करने वाली, बुरे कर्म करने वाली, अधिक भटकने वाली तथा कलह प्रिय, होती है। मतान्तर से—पुत्रवती, पति सुख से युक्त, सौन्दर्यवती, धनवती, सुखी तथा गुरुजनों में भक्ति रखने वाली होती है।

षष्ठ भाव—यदि छठे भाव में बुध' हो तो स्त्री दयालु, परोपकारिणी, शत्रुओं को दबाने वाली तथा अल्पायु होती है। यदि बुध शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो रोग और शत्रु से भय खाती है। यदि पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो रोग और शत्रु भय से रहित तथा सुख-सम्पन्न होती है।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में 'बुध' हो तो स्त्री चतुर, विनम्र, उत्तम आचरण वाली, शास्त्रप्रिय, सुखी, सन्ततिवान् चंचल प्रकृति, रूपवती, गृह-कार्य में कुशल तथा सुन्दर पति वाली होती है।

अष्टम भाव—यदि आठवें भाव में 'बुध' हो तो स्त्री दुःखी, कृतघ्न, नीति युक्त, धर्म-रहित तथा अभिमान हीन होती है। मतान्तर

से—सत्यवादिनी, दान करने वाली, सत्कर्म में धन खर्च करने के कारण सदैव खाली हाथ रहने वाली तथा अल्पायु होती है। यदि पापग्रह से युक्त हो तो धनहीन होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में बुध' हो तो स्त्री विनयशील, शांत, मधुर भाषिणी, कार्य-कुशल, कीर्तिमती, भाग्य शालिनी, धार्मिक बन्धनों को मानने वाली, पति एवं पुत्र सुख से युक्त, धनवती, सुन्दरी तथा सुशीला होती है। बुध पापग्रह से युक्त है। तो विपरीत फल समझना चाहिये।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'बुध' हो तो स्त्री सत्कर्म करने वाली, नीतिवान्, विवेकी, पति को मान्य, बहुधन्धी, करने वाली, गुरुजनों की सेविका, सब कार्यों में कुशल, रूपवती, धनवती तथा कम बोलने वाली होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में बुध हो तो स्त्री पति-व्रता, बन्धु जनमान्य, धन का लेन-देन करने वाली, लाभ कमाने वाली, सुन्दर स्वरूप तथा नेत्रों वाली, सबका हित चाहने वाली, श्यामवर्ण, कृश-शरीर वाली तथा सन्तान-सुख से युक्त होती होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'बुध' हो तो स्त्री लड़ाकू, व्याकुल, गुणहीन, तिरस्कृत, रोगिणी, कुटिल-हृदय, धनहीन, परन्तु दान करने वाली तथा पर-पुरुष में आसक्त होती है।

'गुरु' का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित' गुरु' का फल निम्ना-नुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में गुरु' हो तो स्त्री अत्यन्त रूपवती, सत्यवादिनी, गंभीर, सत्य का पक्ष लेने वाली, समस्त सुखों से युक्त, स्त्रियों में श्रेष्ठ, सद् बुद्धिमती, धन-पुत्र आदि से सम्पन्न, रानी के समान सुखी तथा अपने पति की अत्यधिक प्रिय होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री सुन्दर, धर्मशील, सौभाग्यवती, नीतिमान्, हानि-रहित, धनवती, श्रेष्ठ, श्रेष्ठ पति तथा उत्तम कुटुम्ब वाली एवं सुखी होती है। वह अपने गुण तथा स्वभाव के कारण सर्वत्र आदर प्राप्त करती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे, भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री कृश-शरीर वाली, गौरव-रहित, पराक्रमहीन, बहुत दोषों से युक्त, कृपण, नीचबुद्धि वाली, भाई के सुख से युक्त, पति-प्रेम से रहित तथा अधिक खर्च करने वाली होती है।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री सुन्दरी, रूपवती, विद्वान्, गौरव शालिनी, यशस्विनी, धन-धान्य तथा सब प्रकार के सुखों से युक्त, लोक में मान्य प्रसन्नचित्त तथा सभी कार्यों में कुशल होती है।

पंचम भाव—यदि पांचवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री निष्पापु सत्य पथ गामिनी, यशस्विनी, प्रतिष्ठित, नीतियुक्त, व्रत-धर्म में दक्ष, सात पुत्रों वाली, उत्तम बुद्धिवाली, मधुर बोलने वाली, पति-सुख से युक्त तथा शास्त्र-पुराणादि को जानने वाली होती है।

षष्ठ भाव—यदि छठे भाव में गुरु हो तो स्त्री नीति युक्त, श्रेष्ठ कर्म करने वाली, शारीरिक कष्ट एवं उपचार पाने वाली, अनेक प्रकार की विपत्तियों से ग्रस्त, शत्रु से रहित, सत्य बोलने वाली, सुकीर्ति वाली तथा घर के कार्य में आलस्य करने वाली होती है। गुरु नीच का हो तो रोगिणी होती है।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री ज्ञानी, गुणवती, शीलवती, कीर्तिमती, अनेक शास्त्रों को जानने वाली, उत्तम पति वाली, पति-प्रिया, विद्या एवं विनम्र से युक्त तथा सब प्रकार के सुखों से सम्पन्न होती है।

अष्टम भाव—यदि आठवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री विशाल

देह वाली, व्यसनी, रोगी, पति के मन से परित्यक्त, चञ्चला, तीर्थ में घूमने वाली, धन-वस्त्रादि के अभाव का कष्ट सहने वाली तथा पति एवं पुत्र के सुख से वंचिता होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री कृतघ्न, सत्य वादिनी, देव-ब्राह्मणों की भक्ति, सम्पन्न, सन्तति वाली, धनी, भाग्य-शालिनी, सौभाग्यवती, उत्तमपति की पत्नी, सब प्रकार से सुखी तथा रानी की भाँति ऐश्वर्य-शालिनी होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री गुणवती, गुणज्ञ, सत्कर्म करने में प्रख्यात, पुण्यशीला, अनेक दास-दासियों वाली, धन, वस्त्र, आभूषणों से युक्त, पति तथा पुत्र के सुख से सम्पन्न तथा गृह-कार्य करने में कुशल होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री जितेन्द्रिय, कीर्तिमती, सम्पत्तिशालिनी, सत्यभाषिणी, शिल्पकला कुशल, धर्मात्मा, सुख-सम्पन्न, पति की प्यारी, कलाओं को जानने वाली तथा रानी के समान ऐश्वर्य सम्पन्न होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'गुरु' हो तो स्त्री रुग्ण लाभ-रहित, दुष्ट-स्वभाव वाली, परधर्म में आचरण करने वाली, कुटिल-मृदया, बुद्धिहीन, धनहीन, मानहीन, लज्जाहीन तथा इधर-उधर घूमने वाली होती है।

'शुक्र का फल'

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में 'शुक्र' हो तो स्त्री सुन्दर, गौरवर्ण, सुशीला, श्रेष्ठ स्वभाव वाली, कार्यदक्ष, स्वस्थ, सौभाग्यवती, धनवती, मधुर वचन बोलने वाली, धन-पुत्रादि से सुखी तथा कला-कुशल होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री सत्कर्म करने वाली, भाग्यशालिनी, मृदुभाषिणी, प्रख्यात, धन-वस्त्र, आभूषण से सम्पन्न, सुन्दरी, पण्डिता, सब कार्य करने में कुशल तथा सब प्रकार से सुखी होती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री दरिद्र, दुष्ट-स्वभाव की, बन्धुओं से परित्यक्त तथा पति द्वारा परित्यक्त होती है। मतान्तर से—दुर्बल शरीर वाली, कृपणा, धनहीना, कुटिल-हृदया, कामातुरा तथा साधुजनों का अनिष्ट करने वाली होती है।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री सुख एवं सौभाग्ययुक्त, जितेन्द्रिया, धर्म-कर्म में दक्ष, कुल-दीपक, सुशीला, सुन्दरी, दानी, माता-पिता तथा गुरुजनों में भक्ति रखने वाली एवं पतिव्रता होती है।

पंचम भाव—यदि पाँचवें भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री विलासिनी, सुन्दरी, हास्य-मुखी, धनवती, सुखी सत्संगति में रुचि रखने वाली, कुल में श्रेष्ठ, धन-सम्पन्न, अधिक कन्या-सन्तति वाली एवं पतिव्रता होती है।

षष्ठ भाव—यदि छठे भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री क्रोधी, ईर्ष्यालु, तीव्र स्वभाव वाली, कलह-कारिणी, पति एवं पुत्र से परित्यक्त, बहुत शत्रुओं वाल, कफ तथा बात रोग में कष्ट पाने वाली, पति:प्रेम से वंचित तथा शत्रुओं का नाश करने वाली होती है।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री सर्वमान्य, पति-प्रिया, शास्त्ररता, धनवती, प्रभावशालिनी, कलाओं में निपुण, रूपवती, अनेक प्रकार के सुन्दर वस्त्राभूषणों से सम्पन्न, उत्तम पति वाली तथा रति-प्रिया होती है।

अष्टम भाव—यदि आठवे भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री दरिद्र, दु:खी, उद्धत स्वभाव वाली तथा परिजनों से निन्दित होती है। मतान्तर

से—ऐसी स्त्री सुन्दर नेत्रों वाली, अभिमानिनी, धर्मवती, सुशीला, दीर्घायु तथा धन की चिन्ता करने वाली होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री धर्म परायण समाज की नेत्री, धनवती, वस्त्र,अन्न आदि से युक्त, अपनी कला से धनोपार्जन करने वाली, तीर्थ करने वाली, सुन्दरी, सुशीला तथा सौभाग्यवती होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री धनवती, बुद्धिमती, निरोगी, सत्यभाषिणी, यशस्विनी, श्रेष्ठकर्म करने वाली, सम्मान्य, पति की प्रिया, सन्तान से प्रेम रखने वाली, साध्वी तथा रानी के समान सब प्रकार के सुखों से सम्पन्न होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'शुक्र' हो तो स्त्री लाभवती, निर्दोष, अनेक शास्त्रों की जानकार, अनेक प्रकार के आश्रय से युक्त, सत्कर्म करने वाली, सदैव लाभ पाने वाली, हास्य-प्रिया, नृत्य-गीतादि कलाओं में प्रवीण, तथा अप्सरा के समान सुन्दरी होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'शुक्र हो तो स्त्री कपटी दुर्बुद्धि, रोगिणी, कटुभाषिणी, दुर्बल, मलिन स्वभाव वाली तथा बहुत खर्च करने वाली होती है। ऐसी स्त्री बाल्यावस्था में बीमार रहती है।

शनि का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में 'शनि' हो तो स्त्री कुरूप, कृष्णवर्ण, क्रोधिनी, भाई-बहिनों के सुख से रहित, दरिद्रा, नीच प्रकृति वाली तथा रोगिणी होती है। यदि शनि उच्चस्थ अथवा स्वक्षेत्री हो तो स्वस्थ तथा धनवती होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'शनि' हो तो स्त्री दरिद्र, अपयशी, रुग्णा, घातकी, सुखहीना, तथा लोगों के विरुद्ध बोलने वाली

होती है। ऐसी स्त्री प्रारम्भिक अवस्था में निर्धन और दुःखिता होती है। बाद में अपने उद्योग से कुछ धन तथा सुख प्राप्त कर लेती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'शनि' हो तो स्त्री श्रेष्ठ, धन-धान्य सम्पन्न शरणागतों को आश्रय एवं संरक्षण देने वाली, साधु-सन्तों से प्रशंसित, दक्ष, बुद्धिमती, स्व-उपार्जित धन से परिवार का फलन करने वाली तथा सहोदर से हीना होती है।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में 'शनि' हो तो स्त्री चंचल, दुष्ट स्वभाव वाली, मतिमन्द, नीचों की संगति करने वाली, दरिद्र, सुख हीना, मलिन-हृदया, आलस्य वाली, कलह कारिणी तथा वात-पित्त रोग वाली होती है।

पंचम भाव—यदि पाँचवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री निर्दय, गर्विष्ट, पुत्रहीना, साधु-समागम से रहित, वेश्या जैसी दिखाई देने वाली, दुर्बुद्धि, धनहीन तथा रोगिणी होती है।

षष्ठ भाव—यदि छठे भाव में 'शनि' हो तो स्त्री मंदमती, परन्तु गुण ग्राहिका, पुत्रवती, वस्त्रालंकार से युक्त, पुत्रों को प्रिय, रोग तथा शत्रु से हीन, पुष्ट शरीर वाली, धनवती, गुणवती, गुरुजनों की सेविका, प्रतिष्ठिता तथा सन्तोषी-स्वभाव की होती है।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री रोगी, कपटी, द्वेषी, मद्यपान प्रिय, पति द्वारा त्याज्य अथवा विधवा अथवा पति-सुख से हीन, निर्धन, शोक सन्ताप युक्त, तथा निन्दित-कार्य करने वाली होती है।

अष्टम भाव—यदि आठवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री अधर्मी पापिनी, लोगों को धोखा देने वाली, दुष्टस्वभाव वाली कृश शरीर वाली, क्रोधिनी, असन्तुष्टा, पति एवं सन्तान के सुख से रहित तथा आँख में रोग वाली होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री दुष्ट एवं नीच लोगों की संगति एवं मित्रता करने वाली, अधिक खर्च करने

वाली ज्ञान एवं नम्रता से रहित, अधर्मी, गुरुजनों का आदर न करने वाली, धनहीन, गर्विता, कपट करने वाली आचरणहीना तथा कुत्सित पति वाली होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री कुकर्म करने वाली, दुष्ट लोगों की संगति करने वाली, दुर्व्यसनी तथा दरिद्रा होती है। मतान्तर से—धन-सन्तान के सुख से सम्पन्न, शत्रु तथा रोग से रहित, गृह-कार्य में कुशल तथा रानी के समान ऐश्वर्य शालिनी एवं सुखी होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री सुन्दर शरीर वाली, निर्भय, लाभ-युक्त, धनवती, पुत्रवती, रूपवती, सदाचारिणी, सौभाग्यवती, पतिव्रता, अनेक प्रकार के वस्त्राभूषण एवं धन-धान्य से युक्त तथा सुखी होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'शनि' हो तो स्त्री रक्त-वात-कफ दोषी, व्यसनी, अविचारिणी, तिरस्कृत, निर्दय, आलसी, नीचजनों की संगति करने वाली, रोगिणी, कलह-कारिणी, धनहीन तथा अधिक खर्च करने वाली होती है।

राहु का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का फल निम्नानुसार होता है—

लग्न—यदि पहले भाव (लग्न) में 'राहु' हो तो स्त्री लाल नेत्रों वाली, चञ्चल स्वभाव वाली, नीच बुद्धि वाली, गुरुजनों की अनादर करने वाली, पापिनी तथा रोगिनी होती है।

द्वितीय भाव—यदि दूसरे भाव में 'राहु' हो तो स्त्री धनहीना, कामातुरा, अधिक व्यर्थ बोलने वाली, इधर-उधर घूमने वाली, पराये घर में रहने वाली तथा चोर होती है।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'राहु' हो तो स्त्री अपने

छोटे भाई से रहित, वाद-विवाद में जीतने वाली, उत्तम सन्तान वाली, श्रेष्ठ पति वाली, धनवती, कीर्तिमती तथा सब प्रकार के सुखों से सम्पन्न होती है।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में 'राहु' हो तो स्त्री पति-कुल तथा पितृकुल के सुख से हीन, बन्धु-सुख से हीन, अधम पति वाली, एक सन्तान वाली, नीच जनों की संगति करने वाली, दुष्ट प्रकृति वाली तथा चुगलखोर होती है।

पंचम भाव—यदि पाँचवें भाव में 'राहु' हो और वह चन्द्रमा से युक्त अथवा, दृष्ट न हो तो, एक पुत्र वाली होती है। यदि राहु चन्द्रमा के साथ अथवा दृष्ट हो तो सन्तान-हीन, कुमित्र एवं कुबुद्धि वाली होती है।

षष्ठ भाव—यदि छठे भाव में 'राहु' हो तो स्त्री शत्रु एवं रोग से रहित, धनवती, उत्तम बुद्धि वाली तथा समस्त कार्यों में कुशल होती है।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में 'राहु' हो तो स्त्री विधवा अथवा अधम पति वाली, क्रोधिनी, कुरूपा, चरित्र हीना तथा मध्यम भाग्य वाली होती है।

अष्टम भाव—यदि आठवें भाव में 'राहु' हो तो स्त्री दुर्बल-शरीर वाली, रोगिनी, पापाचारिणी, चोटी करने वाली तथा धनवती होती है।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'राहु' हो तो स्त्री अपने कुलाचार के विपरीत चलने वाली, शत्रु तथा रोग से पीड़ित, मलिन तथा अपने भाइयों का उपचार करने वाली होती है।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में 'राहु' हो तो स्त्री चंचला, दुराचारिणी, ढीठ, सुख-रहिता, अत्यधिक काम वासना वाली तथा परायेधन को ठगने वाली होती है।

एकादश भाव—यदि ग्यारहवें भाव में राहु हो तो स्त्री सुन्दरी, सदाचारिणी, सत्यवादिनी, धन-वस्त्र-सम्पन्न सब कार्यों में कुशल तथा सब प्रकार के सुख भोगने वाली होती है ।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में 'राहु' हो तो स्त्री, धनहीना, धर्म हीना, मतिमन्द, दूसरों की बात पर चलने वाली, पति-सुख से रहित तथा व्यर्थ खर्च करने वाली होती है ।

'केतु' का फल

स्त्री-कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का कल निम्नानुसार होता है—

लग्न :—यदि पहले भाव (लग्न) में 'केतु' हो तो स्त्री रोगिनी तथा पति को कष्ट देने वाली होती है ? यदि केतु शुभग्रह से दृष्ट अथवा युत हो तो पति-पुत्रादि के सुख से सम्पन्न होती है ।

द्वितीय भाव:—यदि दूसरे भाव में 'केतु' हो तो स्त्री अपने बन्धुओं से विरोध करने वाली तथा तथा धनहीना होती है । यदि केतु शुभग्रह से दृष्ट अथवा युत हो तो धनवती एवं कुटुम्ब - सुख से युक्त होती है ।

तृतीय भाव—यदि तीसरे भाव में 'केतु' हो तो स्त्री धनवती सुखी सन्तान वाली शत्रु को नष्ट करने वाली तथा छोटे भाई से रहित होती है ।

चतुर्थ भाव—यदि चौथे भाव में 'केतु' हो तो स्त्री को अपनी माता का सुख नहीं होता । युवावस्था में कष्ट तथा पिता का उपार्जित धन नष्ट होता है ।

पंचम भाव—यदि पाँचवें भाव में 'केतु' हो तो स्त्री थोड़े पुत्र वाली, ग्रह-कार्य में कुशल, मलीन बुद्धि, झगड़ालू स्वभाव की तथा भाई को कष्ट देने वाली होती है ।

षष्ठ भाव—यदि छठे भाव में 'केतु' हो तो स्त्री शत्रु और

रोग के भय से रहित, मलिन-हृदया धनवती तथा भूमि-पशु आदि से सम्पन्न होती है ।

सप्तम भाव—यदि सातवें भाव में केतु हो तो स्त्री पति को पीड़ा देने अथवा धन का नाश करने वाली होती है । वह सदैव व्यग्र बनी रहने वाली तथा मार्ग में शत्रु से भय पाने वाली होती है ।

अष्टम भाव—यदि आठवें भाव में 'केतु' हो तो स्त्री को धन तथा वाहन का अर्थ लाभ होता है, परन्तु पति को कष्ट मिलता है। ऐसी स्त्री के गुप्ताङ्ग में भी कष्ट रहता है ।

नवम भाव—यदि नवें भाव में 'केतु' हो तो स्त्री उत्तम पुत्रों वाली, शत्रु एवं रोग से रहित, तपस्या एवं दान आदि सत्कर्म करने में तत्पर तथा नीच जाति के लोगों से धन का लाभ पाने वाली होती है ।

दशम भाव—यदि दसवें भाव में केतु हो तो स्त्री कष्ट भोगने वाली तथा पिता के सुख से वंचित रहती है। यदि केतु कन्या राशि में हो तो उसे धन-धान्य का सुख प्राप्त होता है ।

एकादशभाव—यदि ग्यारहवें भाव में 'केतु' हो तो स्त्री सब कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाली, प्रिय वादिनी, शास्त्र के मर्म को जानने वाली, निपुण, सुन्दर वेष वाली तथा सौभाग्यवती होती है।

द्वादश भाव—यदि बारहवें भाव में केतु हो तो स्त्री पति को कष्ट देने वाली, शत्रु को नष्ट करने वाली, व्यर्थ खर्च करने वाली तथा पाँव तथा आँख में रोग वाली होती है ।



त्रिंशांशानुसार फल

विभिन्न राशियों में विभिन्न ग्रहों के त्रिशांस का फल निम्नानुसार समझना चाहिये ।

'मेष'–'बृश्चिक' में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो बली हो, वह, 'मेष' अथवा 'बृश्चिक' राशि में यदि —

(१) 'मङ्गल' के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या (स्त्री) दुश्चरित्रा होती है। ऐसी स्त्री विवाह से पूर्व ही पर-पुरुष गायन करती है।

(२) 'बुध' के त्रिशांश में हो तो मायाविनी होती है।

(३) 'गुरु' के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता होती है।

(४) 'शुक्र' के त्रिशांशों में हो तो दुश्चरित्रा, मतान्तर से— दुष्ट कर्म करने वाली होती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में हो तो दासी होती है और बिना विवाही रहती है।

'बृष'–'तुला' में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो बली हो तो, वह 'वृष' अथवा 'तुला' राशि में यदि —

(१) 'मङ्गल के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या (स्त्री) दुश्चरित्रा, मतान्तर से दुष्ट स्वभाव वाली होती है।

(२) 'बुध' के त्रिशाँश में हो तो समस्त कलाओं में कुशल होती है। संगीत-वादन की ज्ञाता होती है।

(३) 'गुरु' के त्रिशाँश में हो तो गुणवती तथा गीति-वाद्य, नृत्य, चित्रकारी, शिल्प आदि कलाओं में प्रवीण होती है।

(४) 'शुक्र' के त्रिशांश में हो तो सब गुणों से युक्त तथा शील-वती होती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में हो तो 'पुनर्भू' होती है अर्थात् पति के मर जाने पर अथवा उसके जीवित रहते हुये ही दूसरे पुरुष को बैठ जाती है।

मिथुन-कन्या में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो बली हो, वह 'मिथुन' अथवा कन्या राशि में यदि—

(१) 'मङ्गल' के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या कपट करने वाली (कपटिन) होती है।

(२) 'बुध' के त्रिशांश में हो तो गुणवती होती है।

(३) 'गुरु' के त्रिशांश में हों तो पतिव्रता होती है।

(४) 'शुक्र' के त्रिशांश में हो तो काम-भावना से रहित होती है। मतान्तर से—अनेक पुरुषों के साथ रमण करती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में हो तो नपुंसक-पुरुष की पत्नी होती है अर्थात् उसका पति नपुंसक होता है। मतान्तर से—ऐसी स्त्री स्वयं नपुंसक (हिजड़े) जैसी आकृति वाली होती है।

'कर्क में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो वली हो, वह 'कर्क' राशि में यदि —

(१) 'मङ्गल' के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या (स्त्री) स्वेच्छाचारिणी, किसी की बहुत न मानने वाली एवं पर-पुरुष गामिनी होती है।

(२) 'बुध' के त्रिशांश में हो तो चित्रकारी तथा अन्य शिल्पों को जानने वाली होती है।

(३) 'गुरु' के त्रिशांश में हो तो शुभ गुणवती होती है।

(४) 'शुक्र' के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता होती है। मतान्तर से—व्यभिचारिणी या बुरे कर्म करने वाली होती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में हो तो 'पतिघातिनी' होती है अर्थात् पति की हत्या करती है।

'सिंह' में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो बली हो, वह 'सिंह' राशि में यदि—

(१) 'मङ्गल' के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या (स्त्री) स्वेच्छाचारिणी होती है। मतान्तर से—पुरुषों जैसा आचरण करती है।

(२) 'बुध' के त्रिशांश से दुश्चरित्रा होती है। मतान्तर से—पुरुष जैसे स्वभाव वाली होती है।

(३) गुरु' के त्रिशांश में 'राजपत्नी' अर्थात् महाभाग्य-शालिनी होती है।

(४) शुक्र' के त्रिशांश में पर-पुरुष गामिनी होती है। मतान्तर से—पिता, भाई, जेठ, देवर आदि के साथ भी सहवास करती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में पुरुष के समान प्रगल्या होती है। मतान्तर से—पर-पुरुषगामिनी, कुलटा होती है।

'धनु'–'मीन' में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो बली हो, वह 'धनु' अथवा 'मीन' राशि में यदि—

(१) 'मङ्गल' के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या (स्त्री) अनेक गुणों से युक्ता होती है।

(२) 'बुध' के त्रिशांण में हो तो धनवती होती है। मतान्तर से—ज्ञानवती होती है।

(३) 'गुरु' के त्रिशाँश में हो तो समस्त शुभ गुणों से युक्ता होती है।

(४) 'शुक्र' के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता होती है। मतान्तर से—पर-पुरुषों से प्रेम करने वाली होती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में हो तो अल्प-कामवासना वाली अर्थात् अल्प-रति करने वाली होती है।

'मकर'–'कुम्भ' में त्रिशांश फल

लग्न तथा चन्द्रमा में जो बली हो, 'वह 'मकर' अथवा कुम्भ' राशि में यदि—

(१) 'मङ्गल' के त्रिशांश में हो तो ऐसी कन्या (स्त्री) दासी होती है।

(२) 'बुध' के त्रिशांश में हो तो दुष्टा अर्थात् खोटी बुद्धि वाली होती है।

(३) 'गुरु' के त्रिशांश में हो तो पतिव्रता होती है।

(४) 'शुक्र' के त्रिशांश में हो तो वन्ध्या होती है।

(५) 'शनि' के त्रिशांश में हो तो किसी नीच-व्यक्ति से प्रेम तथा सहवास करती है।

टिप्पणी—लग्न और चन्द्रमा—इन दोनों में से जो बलवान् हो उसके त्रिशांश का फल ठीक होगा, हीनबली का फल नहीं होगा।



नवांशानुसार फल

नवमांश फल

विभिन्न भावों में विभिन्न ग्रहों के नवांश का फल निम्नानुसार समझना चाहिये।

१—यदि सप्तम भाव में 'सूर्य' की राशि अथवा सूर्य का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति विद्वान्, लेखक विचारक, अधिकारी, कोमल स्वभाव वाला, ऊँचे शरीर का तथा मन्द-रति करने वाला तथा व्यवसायी होता है।

२—यदि सप्तम भाव में 'चन्द्रमा' की राशि अथवा चन्द्रमा का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति दयालु, कोमल स्वभाव का, शीलवान्, विद्वान, धनी, व्यवसायी तथा अत्यन्त कामी होता है,

३—यदि सप्तम भाव में 'मङ्गल' की राशि अथवा मङ्गल का नवमाँश हो तो ऐसी स्त्री का पति कृषक, जमींदार, क्रोधी, हिंसक, व्यसनी, नीच-प्रकृति का, धनी तथा अनेक स्त्रियों की इच्छा करने वाला होता है।

४—यदि सप्तम भाव में 'बुध' की राशि अथवा बुध का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति कवि, लेखक, सम्पादक, शोधकर्त्ता, विद्वान्, पण्डित, चतुर, मायावी, न्यायाधीश कामी, रतिज्ञ धनी तथा सब कलाओं में कुशल होता है।

५—यदि सप्तम भाव में 'गुरु' की राशि अथवा गुरु का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति जितेन्द्रिय, तेजस्वी, गुणवान्, विशेषज्ञ, धर्मात्मा, प्राचीन परम्पराओं का पोषक, लोभी, चिड़चिड़े स्वभाव वाला, त्यागी, सेवा परायण, मन्त्री, न्यायाधीश तथा पत्नी-भक्त होता है।

६—यदि सप्तम भाव में 'शुक्र' की राशि अथवा शुक्र का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, भोगी, गुणवान्, सौभाग्यशाली तथा सबको प्रिय होता है।

७—यदि सप्तम भाव में 'शनि' की राशि अथवा शनि का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री का पति सामान्य धनी, मूर्ख, वृद्ध, आलसी, क्रोधी, व्यसनी तथा चिड़चिड़े स्वभाव का होता है।

८—यदि सप्तम भाव में मङ्गल का नवांश हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री के गुप्ताङ्ग में रोग होता है।

९—यदि सप्तम भाव में शुभ ग्रह का नवांश हो और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री का गुप्ताङ्ग अत्यन्त सुन्दर होता है।

१०—यदि सप्तम भाव तथा अष्ठम भाव में पापग्रह हों तथा आठवें भाव का स्वामी जिस ग्रह के नवमांश में बैठा हो, उस ग्रह की दशा अथवा अन्तर्दशा में वह स्त्री विधवा होती है।

११—यदि नवमांश में शुद्ध होकर चार ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो ऐसी स्त्री महारानी होती है।

१२—यदि नवमांश में शुद्ध होकर पाँच ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो

वह विमान पर चढ़ने वाली, महाऐश्वर्य शालिनी, साक्षात् लक्ष्मी-तुल्य होती है।

१३—यदि मङ्गल और शुक्र एक दूसरे के नवमांश हों तो ऐसी स्त्री पर-पुरुषगामिनी होती है।

१४—यदि लग्न में वृष अथवा तुला राशि हो तथा उसमें कुम्भ का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री पुरुषाकृति बनाई हुई दूसरी स्त्री के द्वारा अपनी कामाग्नि को शान्त करती है।

१५—यदि शनि शुक्र के नवमांश हो, शुक्र शनि के नवमाँश हो तथा दोनों ग्रह एक दूसरे को देखते हों तो ऐसी स्त्री पुरुषाकृति बनाई हुई दूसरी स्त्री के द्वारा अपनी कामाग्नि को शान्त करती है।

१६—यदि किसी भाव में शुक्र के नवमाँश में मङ्गल तथा मङ्गल के नवमांश में शुक्र हो, तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है।

१७—यदि चन्द्रमा शनि अथवा मङ्गल के नवमांश में हो ऐसी स्त्री, पति के प्रति विश्वासघातिनी एवं दुराचारिणी होती है।



लग्नस्थ ग्रह-राशि का फल

लग्नस्थ ग्रह-राशि का विशेश फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

१—यदि लग्न और चन्द्रमा समराशि (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन) में हों तो स्त्री, स्त्रियों जैसी आकृति वाली सुन्दरी, अलङ्कार युक्त, शीलवती, पतिप्रिया तथा पतिव्रता होती है।

२—यदि लग्न और चन्द्रमा विषम-राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ) में हों तो ऐसी स्त्री पुरुषों जैसी आकृति वाली, दुराचारिणी पर पुरुष गामिनी होती है।

३—यदि लग्न और चन्द्रमा समराशियों में हों और वे शुभग्रहों द्वारा दृष्टयी हों तो ऐसी स्त्री सुन्दर, वस्त्राभूषणों को धारण करने वाली, शीलवती तथा शुभगुण सम्पन्न होती है।

४—यदि लग्न और चन्द्रमा सम-राशियों पर हों और उन पर सूर ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री मध्यम स्वभाव वाली होती है।

५—यदि लग्न और चन्द्रमा विषम-राशियों में हों और वे शुभ-ग्रहों द्वारा दृष्टि हों तो ऐसी स्त्री मिश्रित स्वभाव वाली होती हैं।

६—यदि लग्न और चन्द्रमा विषम-राशियों में हों और वे पाप-ग्रहों द्वारा दृष्ट अथवा युक्त हों तो ऐसी स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली, पापिनी, बुरे कार्य करने वाली तथा व्यभिचारिणी होती है।

टिप्पणी—जो ग्रह अधिक बली हों, उन्हीं के आधार पर स्त्री के स्वभाव आदि का निर्णय करना चाहिये।

७—यदि लग्न में 'सूर्य' हो तो ऐसी स्त्री कृश-शरीर, क्रूर-स्वभाव, रोगयुक्त, कांतिहीन, परान्नप्रिय, कृतघ्न तथा दुष्ट प्रकृति की होती हैं।

८—यदि लग्न में शुक्लपक्षक, 'चन्द्र' हो तो ऐसी स्त्री गौरवर्ण तथा सुन्दर होती है, यदि कृष्णपक्ष का 'चन्द्र' हो तो कृशांगी, कुवस्त्र धारिणी तथा विवाद प्रिय होती। सामान्यत: लग्न में चन्द्रमा की स्थिति हो तो स्त्री रूपवती, धनवती एवं सुखासक्त होती है।

९—यदि लग्न में 'मंगल' हो तो ऐसी स्त्री अहङ्कारिणी होती है।

१०—यदि लग्न में 'मङ्गल' हो तो ऐसी स्त्री कुटिल-स्वभाव की होती है। मतान्तर से—गुणवती तथा कला निपुण होती है।

११—यदि लग्न में 'गुरु' हो तो ऐसी स्त्री शुद्धाचारिणी होती है।

१२—यदि लग्न में 'शुक्र' हो तो ऐसी स्त्री रूपवती, धनवती,

धनवती, गुणवती, गौरवर्ण, श्रेष्ठ स्वभाव वाली, कार्य-कुशल तथा सौभाग्यवती होती है।

१३—यदि लग्न में 'शनि' हो तो ऐसी स्त्री भाग्यहीना होती है।

१४—यदि लग्न में 'राहु' हो तो ऐसी स्त्री पापिनी, रोगिनी, नीच तथा चंचल स्वभाव की होती है।

१५—यदि लग्न में 'केतु' हो तो ऐसी स्त्री रुग्णा तथा पति को क्लेश देने वाली होती है।

टिप्पणी—लग्नस्थ ग्रहों का अलग-अलग विशिष्ट फल इसी पुस्तक के 'भागवत ग्रहफल' प्रकरण में देखें।

१६—यदि लग्न में चन्द्रमा और शुक्र ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ईर्ष्यायुक्ता दूसरों को सन्ताप देने वाली, परन्तु स्वयं सुख भोगने वाली होती है।

१७—यदि लग्न में चन्द्रमा और बुध—ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री कला-निपुण, सुन्दरी, सबको प्रिय, सुखी, गुणवती तथा गायन वादन में कुशल होती हैं।

१८—यदि लग्न में बुध और शुक्र—ये दोनों ग्रह हों तो ऐसी स्त्री रूपवती, सौभाग्यवती तथा कला-कुशल होती है।

१९—यदि लग्न में कर्क राशि का चन्द्रमा, बुध, गुरु तथा शुक्र—ये ग्रह बली हों तो ऐसी अनेक शास्त्रों में निपुण होती है।

२०—यदि लग्न में (क) चन्द्रमा, बुध और शुक्र, (ख) बुध, गुरु और शुक्र, अथवा (ग) बुध, गुरु और चन्द्र—इन तीनों ग्रहों की युक्ति हो तो ऐसी स्त्री वस्त्रालंकार एवं दासियों से युक्त, धनवती, रूपवती, गुणवती, ऐश्वर्यशालिनी, सर्वप्रिय तथा सुखी होती है।

२१—यदि लग्न में केवल शुभग्रह ही हों तो ऐसी स्त्री अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों से युक्त तथा सुखी होती है।

२२—यदि लग्न में केवल पापग्रह ही हों तो ऐसी स्त्री अनेक प्रकार के दुःख भोगने वाली तथा दरिद्र होती है।

२३—यदि लग्न में शुभ-अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों तो निमित्त-फल होता है।



सप्तभावस्थ ग्रहफल

सप्तम भावस्थ ग्रहों को विशेष फल निम्नानुसार समझना चाहिए—

१—यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से 'सूर्य' सप्तम भाव में हो तो ऐसी स्त्री पति-परित्यक्ता होती है अर्थात् उसका पति उसे छोड़ देता है। मतान्तर से—ऐसी स्त्री दुष्ट-स्वभाव वाली, कर्कशा तथा पति-प्रेम से वंचिता होती है।

२—यदि सप्तमभाव में 'चन्द्रमा' हो तो ऐसी स्त्री कोमल स्वभाव की तथा लज्जाशीला होती है। यदि चन्द्रमा उच्च का हो तो सुन्दरी, धनो एव वस्त्राभूषण-सम्पन्ना होती है।

३—यदि सप्तम भाव में 'मङ्गल' हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है। मतान्तर से—सौभाग्यहीना एवं कुकर्मरता होती है।

४—यदि सप्तम भाव में 'बुध' हो तो ऐसी स्त्री विदुषी, सौभाग्य शालिनी तथा पति प्रिया होती है। यदि बुध उच्चस्थ हो तो सुन्दर पतिवाली, धनी, अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों का उपयोग करने वाली तथा लेखिका होती है।

५—यदि सप्तम भाव में 'गुरु' हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता, गुणवती, धनवती एवं सुखी होती है। गरु उच्चराशि का तथा उच्च अंश का हो तो अनेक गुणों से सम्पन्न धर्मज्ञ, अत्यन्त रूपवती, स्वर्ण रत्नादि की माला धारण करने वाली तथा पति-सेवा में तत्पर होती है।

६—यदि सप्तम भाव में 'शुक्र' हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर वस्त्राभूषणों वाली एवं रसिक-स्वभाव की होती है। उसका पति गुणवान, धनवान्, वीर, काम-कला में कुशल तथा श्रेष्ठ-पुरुष होता है।

७—यदि सप्तम भाव में 'शनि' हो तो ऐसी स्त्री का पति दरिद्र, रोगी, व्यसनी तथा निर्बल होता है। यदि शनि-उच्च का हो तो पति धनी, गुणी, शीलवान् तथा कामकला-विज्ञ होता है और वह स्वयं भी धनवान् होता है।

८—यदि सप्तम भाव में 'राहु' हो तो ऐसी स्त्री अपने कुल को दोष लगाने वाली, दु:खी तथा पति-सुख से वंचिता होती है। यदि राहु उच्च का हो तो उसे सुन्दर तथा स्वस्थ पति मिलता है।

९—यदि सप्तम भाव में 'केतु' हो तो उस स्त्री के पति को पीड़ा तथा मार्ग में शत्रु-भय होता है। वह सदैव व्यग्रचित्त रहती है तथा धन का नाश होता है।

टिप्पणी—सप्तम भावस्थ ग्रहों का अलग-अलग विशिष्ट फल इसी पुस्तक में 'भागवत ग्रह फल' प्रकरण में देखें।



विशिष्ट योगों का फल

स्त्री की कुण्डली में विभिन्न ग्रह-योगों का प्रभाव निम्नानुसार समझना चाहिए।

राजयोग

१—यदि सप्तम भाव में शुक्र तथा अन्य शुभ ग्रह हों तो ऐसी स्त्री ऐश्वर्यशालिनी होती है।

२—यदि लग्न में चन्द्रमा, दशम भाव में बुध तथा एकादश भाव में सूर्य हो तो ऐसी स्त्री बहुत पुत्र तथा पौत्रों वाली एवं ऐश्वर्यशालिनी होती है।

३—यदि लग्न में उच्च का बुध, द्वितीय भाव में शुक्र, दशम भाव में चन्द्रमा तथा एकादश भाव में गुरु हो तो ऐसी स्त्री समाज में राजपत्नी के समान तथा ऐश्वर्यशालिनी होती है।

४—यदि लग्न में गुरु, सप्तम भाव में चन्द्रमा तथा दशम भाव में शुक्र हों तो ऐसी स्त्री नीचकुल में उत्पन्न होने पर भी रानी के समान सुखी तथा ऐश्वर्यशालिनी होती है।

५—यदि लग्न में कर्क राशि का गुरु अथवा मीन राशि का शुक्र हो तथा कन्या राशि में बुध एवं सप्तम भाव में उच्चस्थ मंगल हो तो ऐसी स्त्री को अत्यधिक सुख प्राप्त होता है।

६—यदि लग्न में कन्या राशि हो और उसमें बुध, शुक्र की युक्ति हो तथा वृषभ राशि का चन्द्रमा अथवा कर्क या मीन राशि का गुरु हो तो ऐसी स्त्री को राजकन्या की भांति सुख प्राप्त होता है।

७—यदि लग्न में उच्चस्थ बुध तथा एकादश भाव में गुरु हो तो ऐसो स्त्री को राजपत्नी के समान सुख प्राप्त होता है।

८—यदि चतुर्थ भाव में उच्च का चन्द्रमा गुरु से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री देवी के समान श्रेष्ठ तथा अत्यन्त सौभाग्यशालिनी होती है।

९—यदि सप्तम भाव में कर्क राशि हो तथा सूर्य एवं गुरु की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री पुत्र-पौत्रादि के सुख से सम्पन्न ऐश्वर्यशालिनी होती है,

१०—यदि सप्तम भाव में मिथुन, सिंह, कन्या, तुला अथवा कुम्भ राशि का चन्द्रमा हो तथा प्रथम (लग्न) चतुर्थ एव दशम भाव में पापग्रह न हों तो ऐसी स्त्री शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाली, पति द्वारा सम्मानित एवं राजपत्नी के समान ऐश्वर्यशालिनी तथा सुखी होतो है।

११—यदि एकादश भाव में चन्द्रमा एवं सप्तम भाव में बुध तथा शुक्र हों और गुरु की उन पर दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री समाज में प्रसिद्धि एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाली तथा ऐश्वर्यशालिनी होती है।

१२—यदि लग्न, तृतीय, पंचम तथा नवम — इन्हें छोड़कर अन्य किसी भी भाव में, राहु के अतिरिक्त, चार शुभग्रह हों तो ऐसी स्त्री समाज में राजपत्नी के समान सम्मान अर्जित करती है।

१३—यदि केन्द्र में कोई राशि शुभ ग्रहों से युक्त हो तथा सप्तम भाव में मेष, मिथुन, कन्या अथवा कुम्भराशि युक्त कोई पापग्रह हो तो ऐसी स्त्री विशेष सुखी एवं ऐश्वर्यशालिनी होती है।

टिप्पणी—(१) 'ज्योतिष योग रत्नाकर' खण्ड में जिन राजयोगों का वर्णन किया गया है, उन्हें भी देखलें।

(२) यदि स्त्री स्वयं अपने पाँवों पर खड़ी हो तो वह राजयोग के फल का स्वयं उपभोग करती है, यदि पति के अधीन हो तो राजयोगों का लाभ उसके पति को मिलता है और पति के माध्यम से ही वह स्वयं सुख, यश, कीर्ति तथा ऐश्वर्य आदि का उपभोग करती है।

शुभ योग

१—यदि सप्तम अथवा अष्टम भाव में शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा उक्त स्थान शुभ ग्रह से युक्त हों तो ऐसी स्त्री सौभाग्यवती, शीलवती, आचार सम्पन्ना, दीर्घायु, पतिव्रता एवं पति की आज्ञाकारिणी होती है।

२—यदि सप्तम तथा अष्टम भाव में पापग्रह हों, परन्तु नवम-भाव शुभग्रहों से युक्त हो तो ऐसी स्त्री पति एवं पुत्र से युक्त तथा सुखी रहती है।

३—यदि सप्तम भाव में कर्क राशि गत चन्द्रमा हो तथा उसके साथ गुरु भी हो तो ऐसी स्त्री सुन्दरता में साक्षात् रति के समान ही होती है और वैसी सुन्दरी स्त्रियाँ संसार में कम ही दिखाई देती हैं।

४—सप्तम भाव में सम राशि (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन) हो और वह शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त हो तो ऐसी स्त्री पुण्यवान् एवं राजमान्य होती है।

५—यदि सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर नेत्रों वाली, उत्तम वस्त्रालंकारों से युक्त तथा सङ्गीत-कला में प्रवीणा होती है।

६—यदि सप्तम भाव में बुध तथा चन्द्रमा हों तो ऐसी स्त्री सब कलाओं को जानने वाली, गुणवती तथा सुखी होती है।

७—यदि सप्तम भाव में शुक्र और बुध हों तो ऐसी स्त्री अत्यन्त सुन्दरी, सब कलाओं को जानने वाली तथा भाग्यशालिनी होती है।

८—यदि सप्तम भाव में शुक्र तथा चन्द्रमा हों तो ऐसी स्त्री सुन्दरी, सुख-सम्पन्ना, परन्तु ईर्ष्यालु-स्वभाव की होती है।

९—यदि केवल षड्वर्ग में शुक्र केतु में बैठा हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त सुन्दर, स्थूल नितम्बों वाली, धन-पुत्रादि से सम्पन्न, [सुखी तथा रानी के समान ऐश्वर्य-शालिनी होती है।

१०—यदि कर्क लग्न का उदय हो, सप्तमभाव में सूर्य हो और उस पर गुरु की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री अप्सराओं में प्रधान अथवा रानी के समान सुन्दरी, स्वस्थ, ऐश्वर्यशालिनी तथा पुत्र-पौत्री से युक्त होती है।

११—यदि शुभ ग्रह केन्द्र में हों तथा पापग्रह छठे, नवे एवं बारहवें भाव में हों तो ऐसी स्त्री सुन्दर, शान्त स्वभाव वाली, धनवती गुणवती, पुत्रवती, ऐश्वर्यशालिनी तथा रानी के समान होती है।

१२—यदि षड्वर्ग में शुद्ध होकर तीन ग्रह केन्द्र में पड़े हों तो ऐसी स्त्री रानी होती है।

१३—यदि बुध उच्च का होकर लग्न में बैठा हो तथा गुरु एकादश भाव में हो, तो ऐसी स्त्री राज-पत्नी अथवा रानी के समान ऐश्वर्य-शालिनी होती है तथा उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में की जाती है।

१४—यदि वृष, कर्क, कन्या वृश्चिक, मकर एवं मीन राशि में मङ्गल, बुध, गुरु तथा शुक्र हों तो ऐसी स्त्री बड़ी विदुषी, साध्वी, गुणवती तथा पुत्रवती होती है।

अशुभ योग

१—यदि सप्तम भाव में पापग्रह से दृष्ट शनि बैठा हो तो ऐसी स्त्री युवावस्था में ही वृद्धा जैसी हो जाती है।

२—यदि सप्तम भाव में पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री केश-हीना होती है।

३—यदि जन्म समय में शुक्र, चन्द्र तथा गुरु बलहीन हो, शनि मध्यम बली हो तथा सूर्य, मंगल एवं बुध बलवान हो तथा लग्न में विषम राशि हो तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान ही प्रगल्भा होती है।

४—यदि लग्न में चन्द्र मङ्गल का योग हो तो ऐसी स्त्री का मासिकधर्म अव्यवस्थित होता है।

५—यदि लग्न में राहु-चन्द्र की युक्ति हो तो ऐसी स्त्री को हिस्टीरिया रोग होता है।

वन्ध्या योग

१—यदि पंचम भाव में पापग्रह की राशि हो तथा पंचम भाव पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या होती है।

२—यदि लग्न में मेष, वृश्चिक अथवा मकर राशि हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या होती है।

टिप्पणी—अन्य वन्ध्या योगों को विभिन्न योगों में देखें।

पति त्याग योग

१—यदि सप्तम भाव में एक पापग्रह बलहीन बैठा हो तथा उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि भी न हो तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग देता है।

२—यदि सप्तम भाव में सूर्य, मंगल तथा शनि हीनवली हों और वे शुभ ग्रह से दृष्ट भी हों तो ऐसी स्त्री को उसका पति त्याग देता है।

टिप्पणी—पति-त्याग विषयक अन्य योगों को विभिन्न प्रकरणों में देखें।

दुराचारिणी योग

१—यदि लग्न में विषम राशि हो, शनि, मध्य वली हो एवं चन्द्रमा, शुक्र तथा बुध बलहीन हों एवं सूर्य, मङ्गल तथा गुरु बलवान् हों तो ऐसी स्त्री बहुपुरुष गामिनी होती है।

२—यदि मङ्गल अथवा शनि की राशि (मेष, वृश्चिक, मकर और कुम्भ) लग्न में हो और उसमें चन्द्रमा सहित शुक्र वैठा हो तथा वह पाप ग्रह से दृष्ट भी हो तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष गामिनी होती है।

३—यदि सप्तम भाव में कर्क अथवा सिंह राशि हो और उसमें शनि के साथ मङ्गल बैठा हो तो ऐसी स्त्री यदि उत्तम कुल में जन्मी हो तो भी वह विधवा होकर अथवा कपट से पति को त्याग कर वेश्या तथा व्यभिचारिणी होती है। ऐसी स्त्री बड़े बुरे स्वभाव वाली तथा धनी होती है।

४—यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह बैठे हों तथा पापग्रह की दृष्टि भी तो ऐसी स्त्री को पति का सुख कभी नहीं मिलता। वह चचल नेत्रों वाली तथा दुराचारिणी होती है।

५—यदि सप्तम भाव दो पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री नीच एवं दुरस्वारिणी होती हैं।

६—यदि सप्तम भाव मे पापग्रहों से दृष्ट शुक्र हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर, स्वेच्छा से जार कर्म करती है।

७—यदि सप्तम भाव में कर्क राशि का मंगल हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर स्वेच्छा से जार कर्म करती है।

८—यदि सप्तम भाव में शुभग्रह बलहीन हों तथा उनके साथ पापग्रह भी हों तो ऐसी स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को अङ्गीकार करती है।

९—यदि सप्तम भाव तीन पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अपने पति को छोड़कर दूसरे पति को अङ्गीकार करती है।

१०—यदि लग्ने में मेष, मकर, कुम्भ अथवा वृश्चिक राशि हो तथा उसमें चन्द्रमा और शुक्र दोनों ही बैठे हों तथा उन पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ पर-पुरुष-गमन करती है।

११—यदि सप्तम भाव में चन्द्रमा के साथ मंगल भी बैठा हो तो ऐसी स्त्री अपने पति की आज्ञा से (स्वीकृति) से पर-पुरुष गमन करती है। मतान्तर से—सप्तम भाव में चन्द्र, मङ्गल तथा शुक्र—इन तीनों ग्रहों की युक्ति हो, तभी यह फल होता है।

१२— यदि राहु सप्तम भावस्थ हो तथा सप्तमेश का राहु से इत्थशाल योग बनता हो तो ऐसी स्त्री आचरणहीन तथा पति का परित्याग करने वाली होती है।

१३—यदि शुक्र द्वितीयेश होकर राहु से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारिणी होती है।

१४—यदि मङ्गल द्वितीयेश होकर शनि से युक्त हो तो ऐसी स्त्री दुराचारिणी होती है।

१५—यदि अष्टम भाव में मङ्गल हो तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

१६—यदि अष्टम भाव में राहु हो तो ऐसी स्त्री धर्म-विहीन एवं पुरुषगामिनी होती है।

१७ लग्न अथवा चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में पापग्रह हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री अपने पिता तथा श्वसुर के कुल को कलंकित करने वाली दुराचारिणी होती है।

विवाह सम्बन्धी योग

१—यदि सप्तम-भाव में शनि तथा लग्न अथवा चतुर्थ भाव में मङ्गल ८ अंश तक हो तो ऐसी कन्या प्रायः कुमारी ही रह जाती है।

२—यदि सप्तमेश पापयुक्त अथवा पापदृष्ट हो तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह हों तो ऐसी कन्या अविवाहित ही रह जाती है।

३—यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में शनि हो तथा उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो ऐसी कन्या आजीवन अविवाहित ही बनी रहती है। यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो बड़ी आयु में विवाह होता है।

४—यदि शनि सप्तमेश के साथ हो तो ऐसी कन्या का विवाह बड़ी आयु में ही हो पाता है।

५—यदि सूर्य-हर्शल का इत्थशाल हो तो ऐसी स्त्री स्वच्छन्दता एवं उद्दाम वासना के वशीभूत होकर प्रेम-विवाह करती है।

६—जिस स्त्री के जन्मकाल में सप्तम भाव में शुभ, अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह होते हैं, उसके दो विवाह होते हैं।

७—यदि लग्नेश एवं सप्तमेश छठे-आठवें अथवा दूसरे-बारहवें भाव में हों तथा अष्टमेश पापग्रह से पीड़ित हो तो विवाहित जीवन दुःखमय रहता है तथा पतिद्वारा परित्याग किये जाने की संभावनायें भी रहती है।

८—यदि जन्मकाल में सप्तमस्थ सूर्य हो तो स्त्री के पति द्वारा उसे परित्यक्ता किए जाने की संभावनायें रहती हैं।

९—यदि सप्तम भाव बलहीन पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो वैवाहिक-जीवन क्लेशपूर्ण रहता है तथा स्त्री के पतिद्वारा त्यागे जाने की सम्भावना भी रहती है।

पति संबंधी योग

१—यदि सप्तम भाव में मीन राशि का शुक्र हो तो ऐसी स्त्री का पति सुन्दर, कामशास्त्रज्ञ, शूर-वीर तथा शास्त्रधारी होता है।

२—यदि सप्तम भाव में बुध तथा शनि की युक्ति हो तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।

३—यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में बुध अथवा शनि हो तो ऐसी स्त्री का पति नपुंसक होता है।

४—यदि जन्म लग्न में चर राशि हो तो ऐसी स्त्री का पति प्रवासी होता है।

५—यदि जन्म लग्न में चार राशि हो तथा लग्नेश एवं तृतीयेश भी चरराशि में हों तो ऐसी स्त्री का पति प्रवासी होता है।

६—यदि जन्म लग्न अथवा चन्द्रमा से सातवें भाव में कोई ग्रह न हो अथवा निर्बल ग्रह हो अथवा सप्तम भाव पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो ऐसे योग वाली स्त्री का पति निरुद्यमी, का पुरुष तथा निन्द्य होता है।

७—यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में चरराशि हो तो ऐसी स्त्री का पति सदैव पर देश में रहता है। यदि स्थिर राशि हो तो घर में ही रहता है तथा यदि द्विस्वभाव राशि हो तो घर तथा परदेश दोनों ही जगह रहता है।

८—यदि पति का जन्मकालीन सूर्य पत्नी के जन्मकालीन सूर्य से १० अंश के भीतर प्रतियोग करता हो तो उनमें जीवन भर परस्पर स्वभाव-वैषम्य रहता है अथवा दोनों में से एक अल्पायु होता है।

वैधव्य योग

१—लग्न और चन्द्रमा में से जो बलवान् हों, उससे सप्तम भाव में मंगल हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

२—यदि अष्टम भाव में क्रूर अथवा पापग्रह हो तो वह वैधव्य कारक होता है।

३—यदि सप्तमेश अष्टम भाव में तथा अष्टमेश सप्तम भाव में हो और एक या दोनों स्थान पापग्रहों से दृष्ट भी हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

४—यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम और अष्टम भाव में तीन या चार पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

५—यदि लग्न तथा सप्तम–दोनों भावों में पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विवाह के सात-आठ वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है।

६—यदि चन्द्रमा से सातवें, आठवें तथा बारहवें भाव में शनि तथा मंगल—दोनों बैठे हों और वे पापग्रहों से दृष्टि भी हों तो ऐसी स्त्री विवाहोपरान्त शीघ्र ही विधवा हो जाती है।

७—यदि चन्द्रमा से सप्तम भाव में मङ्गल, शनि, राहु तथा सूर्य–इन चारों में से कोई भी दो ग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

८—यदि सप्तम भाव में बहुत या सभी पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

९—यदि क्षीण चन्द्रमा अथवा नीच या असङ्गत राशि का चन्द्रमा छठे अथवा आठवें भाव में हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१०—यदि सप्तम भाव में शनि हो तथा सभी पापग्रह उसे देखते हों तो ऐसी स्त्री का या तो विवाह होता ही नहीं है और यदि हो जाय तो उसके पति की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। ऐसे योगवाली स्त्री अपने पति की विरोधिनी भी होती है।

११—यदि सप्तम भाव में पाप-दृष्ट मंगल हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१२—यदि द्वितीय अथवा सप्तम भाव में पापग्रह हो तो भी वैधव्य योग होता है।

१३—यदि सप्तमेश तथा अष्टमेश अष्टमभाव में पापग्रह से दृष्ट अथवा युत हों तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१४—यदि अष्टम भाव में राहु तथा चन्द्रमा हों और वे पापग्रह से दृष्ट हो तथा सप्तमेश क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१५—यदि सप्तम भाव में एक सप्तमेश शुभग्रह से युता अथवा दृष्ट न होकर दो पापग्रहों के मध्य में स्थिति हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१६—यदि लग्नेश एवं अष्टमेश की द्वादश भाव में युति हो तथा अष्टम भाव पर पापग्रह की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१७—यदि सप्तम भावस्थ राहु तथा लग्नस्थ मंगल शुभ दृष्टि से हीन हो तो ऐसी स्त्री विधवा हो जाती है।

१८—स्त्री तथा पुरुष—दोनों के नाम के अक्षरों को दुगुना करके, मात्राओं को चार गुना करें। फिर सबमें तीन का भाग दें। यदि दो शेष रहें तो पहले स्त्री की मृत्यु होगी और एक अथवा शून्य बचे तो पहले पुरुष की मृत्यु होगी—यह समझना चाहिए।

लघु अक्षर में एक मात्रा, दीर्घ में दो मात्रा तथा प्लुत में तीन मात्राएँ होती हैं।

१९—यदि लग्न में पापग्रह युक्त राहु हो तथा अष्टम भाव में मंगल हो तो ऐसी स्त्री बाल-विधवा होती है।

२०—यदि आठवें अथवा बारहवें भाव में मेष अथवा वृश्चिक राशि का राहु हो वह स्त्री विधवा होती है।

२१—यदि लग्न से सातवें और आठवें भाव में सूर्य, मंगल; शनि, राहु हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

२२—यदि लग्न तथा सप्तम भाव में पापग्रह हो तथा षष्ठ अथवा अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री विवाह के आठवें वर्ष विधवा होती है।

२३—यदि लग्न में सूर्य, मंगल, राहु हों तो स्त्री विधवा होती है तथा इन्हीं ग्रहों की स्थिति में द्वितीय भाव में शुक्र हो तो वह दूसरा पति भी करती है।

विष.कन्या योग

१—यदि लग्न में शनि, पंचम में सूर्य तथा नवम भाव में मङ्गल हो तो ऐसी स्त्री विष-कन्या योग वाली होती है।

२—शनिवार के दिन द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र, मंगलवार को शतभिषा नक्षत्र तथा सप्तमी तिथि एवं रविवार को द्वादशी तिथि एवं रविवार को द्वादशी तिथि एवं विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाली स्त्री विष-कन्या योग वाली होती है।

३—(क) द्वादशी तिथि, शतभिषा नक्षत्र एवं रविवार, (ख) द्वितीया तिथि, आश्लेषा नक्षत्र एवं मङ्गलवार, तथा (ग) सप्तमी तिथि, कृत्तिका नक्षत्र एवं शनिवार--इनमें से किसी भी योग में जन्म लेने वाली स्त्री विष-कन्या योग वाली होती है।

टिप्पणी—'विष-कन्या' योग वाली स्त्री शोक-सन्तप्ता, हत-भाग्या तथा वस्त्रालङ्कार-रहिता होती है।

सन्तति योग

१—यदि लग्न में वृष, सिंह, कन्या अथवा वृश्चिक राशि हो तो ऐसी स्त्री के कम पुत्र होते हैं।

२—यदि लग्न में उक्त राशियाँ हों और उनके 'शुभ ग्रह स्थित हों तो ऐसी स्त्री सुन्दर सन्तानों को जन्म देती है।

३—यदि पंचम भाव में शुभ ग्रहों का योग अथवा दृष्टि हो तो स्त्री अधिक सन्तानों को जन्म देती है।

४—यदि पंचम भाव में धनु अथवा मीन राशि हो तथा गुरु पंचम भाव में स्थित हो अथवा पंचम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसे योग वाली स्त्री के सन्तान नहीं होती।

५—यदि पंचम भाव में सब शुभ ग्रह हों अथवा उनकी दृष्टि हो तो अधिक सन्तान होती हैं।

६—यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा वृष, कन्या, सिंह तथा वृश्चिक—इन में से किसी राशि में स्थित हो तो ऐसी स्त्री अल्प सन्तान वाली होती है।

७—यदि सप्तम भाव में चन्द्रमा अथवा बुध हो तो ऐसी स्त्री कन्याओं को अधिक जन्म देती है। मतान्तर से—चन्द्रमा हो तो दो तथा बुध हो तो चार कन्याओं को जन्म देती है।

८—यदि पंचम भाव में गुरु अथवा शुक्र हो तो ऐसी स्त्री पुत्रों को अधिक जन्म देती है। मतान्तर से—शुक्र हो तो पाँच कन्याओं को जन्म देती है।

९—यदि सप्तम भाव पापग्रह की राशि हो अथवा सप्तम भाव पापग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री के या तो संतान होती ही नहीं है, अथवा कम होती हैं।

१०—यदि पंचम भाव में मंगल तथा सप्तम भाव में राहु हों तो ऐसी स्त्री को संतान का अभाव होता है।

११—यदि सप्तम भाव में सूर्य अथवा राहु हों तो ऐसी स्त्री की सन्तान जीवित नहीं रहती। मतान्तर से—सप्तम भवा में राहु हो तो पुत्र-सन्तति का लाभ होता है।

१२—यदि अष्टम भाव में शुक्र अथवा गुरु हो तो ऐसी स्त्री की सन्तान जीवित नहीं रहती।

(१३) यदि पंचम भाव में 'सूर्य' हो तो एक पुत्र का जन्म होता है।

यदि पंचम भाव में 'चन्द्रमा' हो तो दो कन्याओं का जन्म होता है।

(१४) यदि पंचम भाव में 'मङ्गल' हो तो तीन पुत्रों का जन्म होता है।

(१५) यदि पंचम भाव में 'बुध' हो तो चार कन्याओं का जन्म होता है।

(१६) यदि पंचम भाव में 'गुरु' हो तो पाँच पुत्रों का जन्म होता है।

(१७) यदि पंचम भाव में 'शुक्र' हो तो सात कन्याओं का जन्म होता है।

(१८) यदि सप्तम भाव में 'राहु हो तो सन्तान का अभाव होता है अथवा दो कन्याओं का जन्म होता है।

(१९) यदि नवम भाव में 'शुक्र' हो तो छै: कन्याओं का जन्म होता है।

(२०) यदि वृष, वृश्चिक, सिंह, अथवा कन्या—इनमें से किसी भी राशि पर चन्द्रमा बैठा हो तो ऐसी स्त्री अल्प पुत्रवती होती है।

(२१) यदि पंचमेश के नवमांश में शनि अथवा गुरु हो तो सन्तान नहीं होती।

(२२) पंचम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, पंचमेश केन्द्र या त्रिकोणों में हो और शुभग्रहों से दृष्ट हो तो बहुत संतानें होती हैं।

(२३) यदि सप्तम भाव में मङ्गल हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो गर्भपात होता है अथवा कम संतानें होती हैं।

(२४) यदि पति-पत्नी दोनों की कुण्डली में तुलाराशि गत शनि अथवा हर्शल हो तो सन्तान-सुख नहीं होता।

(२५) यदि सप्तम भाव में शनि-मङ्गल दोनों हों तो गर्भपात होता है अथवा कम सन्तानें होती हैं।

(२६) यदि अष्टम भाव में बुध, गुरु और शुक्र हो तो गर्भ नष्ट होता है अथवा सन्तान होकर मर जाती है।

(२७) यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा और बुध हों तो स्त्री 'काक-बन्ध्या' होती है।

टिप्पणी—जो स्त्री केवल एक ही सन्तान को जन्म दे, दूसरी बार गर्भवती ही न हो, उसे काकवन्ध्या कहते हैं।

यदि पंचम भाव में तीन पापग्रह हों अथवा तीन पापग्रहों की दृष्टि हो तथा पंचमेश शत्रु राशि में हो तो ऐसी स्त्री वन्ध्या होती है।

सन्यासिनी योग

(१) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में पापग्रह बैठा हो तथा नवम भाव में कोई अन्यग्रह बैठा हो, वह सन्यासिनी होती है।

नवम भाव में जो ग्रह बैठा हो, उसी की प्रव्रज्या समझनी चाहिए। यथा—

(क) 'सूर्य' बैठा हो तो स्त्री 'तपस्विनी' होती है।

(ख) 'चन्द्रमा' बैठा हो तो स्त्री 'कपालिनी' होती है।

(ग) 'मङ्गल' बैठा हो तो स्त्री रक्त वस्त्रधारिणी होती है।

(घ) 'बुध' बैठा हो तो स्त्री दण्ड-धारिणी होती है।

(ङ) 'गुरु' बैठा हो तो स्त्री 'यति' होती है।

(च) 'शुक्र' बैठा हो तो स्त्री 'चक्र-धारिणी' होती है।

(छ) 'शनि' बैठा हो तो स्त्री 'नग्ना' होती है।

२—यदि सप्तम भाव पापयुत अथवा पाप दृष्ट हो तथा नवम भाव शुभ युत अथवा शुभ दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री प्रवासिनी एवं सन्यासिनी होती है।

ब्रह्मवादिनी योग

(१) जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में, लग्न में समराशि हो तथा

मङ्गल-बुध एवं शुक्र बलवान् हों, वह पृथ्वी पर विख्यात्, अनेक शास्त्रों की जानकार तथा ब्रह्मविद्या में प्रवीण, ब्रह्मवादिनी होती है।

(२) यदि समराशि में लग्न हो तथा शुक्र, बुध, चन्द्र तथा गुरु बलवान् होकर उसमें बैठे हों, तो ऐसी स्त्री वेद-वेदान्त के विचार तथा आगम शास्त्रों के अर्थ को जानने में निपुण ब्रह्मवादिनी होती है।

तपस्विनी योग

(१) यदि सप्तम भाव में पापग्रह तथा नवम भाव के शुभग्रह हों तो ऐसी स्त्री तपस्विनी होती है।

मृत्यु सम्बन्धी योग

(१) यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि में चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु शस्त्र अथवा अग्नि द्वारा होती है।

(२) यदि कर्क में शनि तथा मकर राशि में चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु जलोदर रोग से होती है।

(३) यदि जन्मकाल में दशम भाव में सूर्य तथा चतुर्थ भाव में मङ्गल हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पर्वत से गिर कर होती है।

(४) यदि जन्मकाल में द्वितीय भाव में मंगल, सप्तम भाव में चन्द्रमा तथा चतुर्थ भाव में शनि हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु कुयें या तालाब में डूबकर होती है।

(५) यदि जन्मकाल में सूर्य और चन्द्रमा कन्याराशि में पापग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु बन्धना से होती है।

(६) यदि जन्म काल में सूर्य तथा चन्द्रमा धनु, मीन या मिथुन लग्न में हों तो ऐसी स्त्री की मृत्यु पानी में डूबकर होती है।

(७) यदि लग्न से आठवें स्थान में पापग्रह तथा द्वितीय भाव में शुभग्रह होने पर भी ऐसा योग सम्भव होता है।

(८) अष्टमेश जिस ग्रह के नवमांश में हो उसकी दशा अन्तर्दशा में मृत्यु होती है।

(९) यदि लग्न में शुभ ग्रह हों तथा द्वितीय एवं द्वादश भाव में भी शुभ ग्रह हो तो ऐसी स्त्री की मृत्यु अपने पति से पहले (सुहागिन रहते हुये) ही होती है।

(१०) स्त्री की राशि से पुरुष (पति) की राशि विषम हो तो पहले स्त्री की तथा सम हो तो पहले पुरुष की मृत्यु होती है।

विविध योग

(१) स्त्री को गोचर से उपचय स्थान में बलवान् चन्द्र एवं मंगल स्वप्नवांश अथवा स्वराशि में आने पर, उस मास एवं उस दिन में गर्भ-स्थिति संभव होती है।

(२) स्त्री-पुरुष दोनों के नामाक्षरों को दुगुना कर, मात्राओं को चौगुना करें, फिर सबको जोड़कर, तीन का भाग दें। यदि दो शेष बचें तो पहले स्त्री की मृत्यु तथा एक अथवा शून्य शेष बचे तो पहले पुरुष (पति) की मृत्यु समझनी चाहिए। लघु अक्षर में एक मात्रा, दीर्घ में दो मात्रायें तथा प्लुत में तीन मात्रायें मानी जाती हैं।

(३) जिस कन्या का जन्म तिथि की अन्तिम घड़ी में हुआ हो वह रूपहीना होती है। जिसका जन्म वार की अन्तिम घड़ी में हुआ हो वह बाल्यावास्था में पुरुष का आश्रय लेती है। जिसका जन्म नक्षत्र की अन्तिम घड़ी में हुआ हो, उसे वैधव्य प्राप्त होता है। जिसका जन्म 'भद्रा' करण में हुआ हो, उसे तथा उसके पति दोनों को कष्ट प्राप्त होता है।

(४) स्त्री की जन्म-कुण्डली के प्रथम (लग्न) चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम तथा दशम भाव में यदि बलवान् शुभग्रह स्थित हो तो शुभ फल होता है, परन्तु भावेश के अतिरिक्त इन भावों में यदि पापग्रह हों तो अशुभ फल प्राप्त होता है।

समाप्त

अत्यन्त उपयोगी [illegible]

१—योग चिकित्सा २ खण्ड	...	११)५०
२—प्राणायाम के असाधारण प्रयोग	...	५)७५
३—योगासन से रोग निवारण	...	५)७५
४—सूर्य नमस्कार से रोग निवारण	...	३)५०
५—अष्टाङ्ग योग सिद्धि	...	५)७०
६—[illegible]	...	५)७०
७—[illegible]पिका	...	४)
८—चरक संहिता	...	३)७५
९—शिव संहिता	...	३)२५
१०—गोरक्ष संहिता	...	३)
११—बृहद् शिव स्वरोदय	...	३)५०
१२—सौ वर्ष तक स्वस्थ रहें	...	३)
१३—हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विज्ञान)	...	५)५०
१४—मरने के बाद	...	४)५०
१५—सरल प्राकृतिक चिकित्सा विधान	...	५)
१६—सरल घरेलू चिकित्सा	...	४)५०
१७—भोजन से स्वास्थ्य	...	४)५०
१८—ब्रह्मचर्य की प्रचण्ड शक्ति	...	३)
१९—शक्ति सम्राट कैसे बनें?	...	३)५०
२०—दृष्टान्त सरित सागर	...	८)५०
२१—चिन्तायें कैसे दूर हों?	...	३)५०
२२—देवता कैसे बनें?	...	३)५०
२३—सुन्दर कैसे बनें?	...	३)५०
२४—धनवान कैसे बनें?	...	४)५०
२५—चाणक्य नीति	...	२)२५
२६—भर्तृहरि शतक त्रय	...	१)६५

प्रकाशक:-संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, वेदनगर,
बरेली-२४३००१ (उ० प्र०)